॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — क्रम पाठः

षष्ठकाण्डे प्रथमः प्रश्नः

सोममन्त्रब्राह्मणनिरूपणं

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

प्राचीनवꣳशम् करोति। प्राचीनवꣳशमिति प्राचीन—वꣳशम्। करोति देवमनुष्याः। देवमनुष्या दिशः। देवमनुष्या इति देव—मनुष्याः। दिशो वि। व्यभजन्त। अभजन्त प्राचीम्। प्राचीम् देवाः। देवा दख्षिणा। दख्षिणा पितरः। पितरः प्रतीचीम्। प्रतीचीम् मनुष्याः। मनुष्या उदीचीम्। उदीचीꣳ रुद्राः। रुद्रा यत्। यत् प्राचीनवꣳशम्। प्राचीनवꣳशम् करोति। प्राचीनवꣳशमिति प्राचीन—वꣳशम्। करोति देवलोकम्। देवलोकमेव। देवलोकमिति देव—लोकम्। एव तत्। तद् यजमानः। यजमान उपावर्तते। उपावर्तते परि। उपावर्तत इत्युप—आवर्तते। परि श्रयति। श्रयत्यन्तर्हितः। अन्तर्हितो हि। अन्तर्हित इत्यन्तः—हितः। हि देवलोकः। देवलोको मनुष्यलोकात्। देवलोक इति देव—लोकः। मनुष्यलोकान् न। मनुष्यलोकादिति मनुष्य—लोकात्। नास्मात्। अस्माल्लोकात्। लोकाथ् स्वेतव्यम्। स्वेतव्यमिव। स्वेतव्यमिति सु—एतव्यम्। इवेति। इत्याहुः। आहुः कः। को हि। हि तत्। तद् वेद। वेद यदि। यद्यमुष्मिन्न्। अमुष्मिँल्लोके। लोकेऽस्ति। अस्ति वा। वा न। न वा। वेति। इति दिख्षु। दिख्ष्वतीकाशान्। अतीकाशान् करोति। करोत्युभयोः। ॥ [१] ॥ उभयोर् लोकयोः। लोकयोरभिजित्यै। अभिजित्यै केशश्मश्रु। अभिजित्या इत्यभि—जित्यै। केशश्मश्रु वपते। केशश्मश्र्विति केश—श्मश्रु। वपते नखानि। नखानि नि। नि कृन्तते। कृन्तते मृता। मृता वै। वा एषा। एषा त्वक्। त्वगमेद्ध्या। अमेद्ध्या यत्। यत् केशश्मश्रु। केशश्मश्रु मृताम्। केश-

श्मश्र्विति केश—श्मश्रु। मृतामेव। एव त्वचम्। त्वचममेद्ध्याम्। अमेद्ध्यामपहत्य। अपहत्य यज्ञियः। अपहत्येत्यप—हत्य। यज्ञियो भूत्वा। भूत्वा मेधम्। मेधमुप। उपैति। एत्यङ्गिरसः। अङ्गिरसः सुवर्गम्। सुवर्गँल्लोकम्। सुवर्गमिति सुवः—गम्। लोकय्यन्तः। यन्तोऽप्सु। अप्सु दीख्षातपसी। अप्स्वित्यप्—सु। दीख्षातपसी प्र। दीख्षातपसी इति दीख्षा—तपसी। प्रावेशयन्न्। अवेशयन्नप्सु। अप्सु स्नाति। अप्स्वित्यप्—सु। स्नाति साख्षात्। साख्षादेव। साख्षादिति स—अख्षात्। एव दीख्षातपसी। दीख्षातपसी अव। दीख्षातपसी इति दीख्षा—तपसी। अव रुन्धे। रुन्धे तीर्थे। तीर्थे स्नाति। स्नाति तीर्थे। तीर्थे हि। हि ते। ते ताम्। ताम् प्र। प्रावेशयन्न्। अवेशयन् तीर्थे। तीर्थे स्नाति। स्नाति तीर्थम्। ॥ [२] ॥ तीर्थमेव। एव समानानाम्। समानानाम् भवति। भवत्यपः। अपोऽश्नाति। अश्नात्यन्तरतः। अन्तरत एव। एव मेद्ध्यः। मेद्ध्यो भवति। भवति वाससा। वाससा दीख्षयति। दीख्षयति सौम्यम्। सौम्यव्वै। वै ख्षौमम्। ख्षौमम् देवतया। देवतया सोमम्। सोममेषः। एष देवताम्। देवतामुप। उपैति। एति यः। यो दीख्षते। दीख्षते सोमस्य। सोमस्य तनूः। तनूरसि। असि तनुवम्। तनुवम् मे। मे पाहि। पाहीति। इत्याह। आह स्वाम्। स्वामेव। एव देवताम्। देवतामुप। उपैति। एत्यथो। अथो आशिषम्। अथो इत्यथो। आशिषमेव। आशिषमित्या—शिषम्। एवैताम्। एतामा। आ शास्ते। शास्तेऽग्नेः। अग्नेस्तूषाधानम्। तूषाधानव्वायोः। तूषाधानमिति तूष—आधानम्। वायोर् वातपानम्। वातपानम् पितृणाम्। वातपानमिति वात—पानम्। पितृणाम् नीविः। नीविरोषधीनाम्। ओषधीनाम् प्रघातः। प्रघात आदित्यानाम्। प्रघात इति प्र—घातः। ॥ [३] ॥ आदित्यानाम् प्राचीनतानः। प्राचीनतानो विश्वेषाम्। प्राचीनतान इति प्राचीन—तानः। विश्वेषाम् देवानाम्। देवानामोतुः। ओतुर् नख्षत्राणाम्। नख्षत्राणामतीकाशाः। अतीकाशास्तत्। तद् वै। वा एतत्। एतथ् सर्वदेवत्यम्। सर्वदेवत्यय्यत्। सर्वदेवत्यमिति सर्व—देवत्यम्। यद् वासः। वासो यत्। यद् वाससा। वाससा दीख्षयति। दीख्षयति सर्वाभिः। सर्वाभिरेव। एवैनम्। एनम् देवताभिः। देवताभिर् दीख्षयति। दीख्षयति बहिः-प्राणः। बहिःप्राणो वै। बहिःप्राण इति बहिः—प्राणः। वै मनुष्यः। मनुष्यस्तस्य। तस्याशनम्। अशनम् प्राणः। प्राणोऽश्नाति। प्राण इति प्र—अनः। अश्नाति सप्राणः। सप्राण

एव। सप्राण इति स—प्राणः। एव दीख्षते। दीख्षत आशितः। आशितो भवति। भवति यावान्। यावानेव। एवास्य। अस्य प्राणः। प्राणस्तेन। प्राण इति प्र—अनः। तेन सह। सह मेधम्। मेधमुप। उपैति। एति घृतम्। घृतम् देवानाम्। देवानाम् मस्तु। मस्तु पितृणाम्। पितृणाम् निष्पक्वम्। निष्पक्वम् मनुष्याणाम्। निष्पक्वमिति निः—पक्वम्। मनुष्याणाम् तत्। तद् वै। वा एतत्। ॥ [४] ॥ एतथ् सर्वदेवत्यम्। सर्वदेवत्यँय्यत्। सर्वदेवत्यमिति सर्व—देवत्यम्। यन् नवनीतम्। नवनीतँय्यत्। नवनीतमिति नव—नीतम्। यन् नवनीतेन। नवनीते-नाभ्यङ्क्ते। नवनीतेनेति नव—नीतेन। अभ्यङ्क्ते सर्वाः। अभ्यङ्क्त इत्यभि—अङ्क्ते। सर्वा एव। एव देवताः। देवताः प्रीणाति। प्रीणाति प्रच्युतः। प्रच्युतो वै। प्रच्युत इति प्र—च्युतः। वा एषः। एषोऽस्मात्। अस्माल्लोकात्। लोकादगतः। अगतो देवलोकम्। देवलोकँय्यः। देव-लोकमिति देव—लोकम्। यो दीख्षितः। दीख्षितोऽन्तरा। अन्तरेव। इव नवनीतम्। नव-नीतम् तस्मात्। नवनीतमिति नव—नीतम्। तस्मान् नवनीतेन। नवनीतेनाभि। नवनीतेनेति नव—नीतेन। अभ्यङ्क्ते। अङ्क्तेऽनुलोमम्। अनुलोमँय्यजुषा। अनुलोममित्यनु—लोमम्। यजुषा व्यावृत्त्यै। व्यावृत्त्या इन्द्रः। व्यावृत्त्या इति वि—आवृत्त्यै। इन्द्रो वृत्रम्। वृत्रमहन्न्। अहन् तस्य। तस्य कनीनिका। कनीनिका परा। पराऽपतत्। अपतत् तत्। तदाञ्जनम्। आञ्ज-नमभवत्। आञ्जनमित्या—अञ्जनम्। अभवद् यत्। यदाङ्क्ते। आङ्क्ते चख्षुः। आङ्क्त इत्या—अङ्क्ते। चख्षुरेव। एव भ्रातृव्यस्य। भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते। वृङ्क्ते दख्षिणम्। दख्षिणम् पूर्वम्। पूर्वमा। आऽङ्क्ते। अङ्क्ते सव्यम्। ॥ [५] ॥ सव्यꣳ हि। हि पूर्वम्। पूर्वम् मनुष्याः। मनुष्या आञ्जते। आञ्जते न। आञ्जत इत्या—अञ्जते। न नि। नि धावते। धावते नि। नीव। इव हि। हि मनुष्याः। मनुष्या धावन्ते। धावन्ते पञ्च। पञ्च कृत्वः। कृत्व आ। आऽङ्क्ते। अङ्क्ते पञ्चाख्षरा। पञ्चाख्षरा पङ्क्तिः। पञ्चाख्षरेति पञ्च—अख्षरा। पङ्क्तिः पाङ्क्तः। पाङ्क्तो यज्ञः। यज्ञो यज्ञम्। यज्ञमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे परिमितम्। परिमितमा। परिमितमिति परि—मितम्। आऽङ्क्ते। अङ्क्तेऽपरिमितम्। अपरिमितꣳ हि। अपरिमित-मित्यपरि—मितम्। हि मनुष्याः। मनुष्या आञ्जते। आञ्जते सतूलया। आञ्जत इत्या—अञ्जते। सतूलया। सतूलयेति स—तूलया। आऽङ्क्ते। अङ्क्तेऽपतूलया। अपतूलया हि। अपतूल-

येत्यप—तूलया। हि मनुष्याः। मनुष्या आञ्जते। आञ्जते व्यावृत्त्यै। आञ्जत इत्या—अञ्जते।
व्यावृत्त्यै यत्। व्यावृत्त्या इति वि—आवृत्त्यै। यदपतूलया। अपतूलयाऽऽञ्जीत। अपतूलये-
त्यप—तूलया। आञ्जीत वज्रः। आञ्जीतेत्या—अञ्जीत। वज्र इव। इव स्यात्। स्याथ् सतूलया।
सतूलया। सतूलयेति स—तूलया। आऽङ्क्ते। अङ्क्ते मित्रत्वाय। मित्रत्वायेन्द्रः। मित्रत्वा-
येति मित्र—त्वाय। ॥ [६] ॥ इन्द्रो वृत्रम्। वृत्रमहन्न्। अहन्थ् सः। सोऽपः। अपोऽभि।
अभ्यम्रियत। अम्रियत तासाम्। तासाय्ँयत्। यन् मेद्ध्यम्। मेद्ध्यय्ँयज्ञियम्। यज्ञियꣳ सदेवम्।
सदेवमासीत्। सदेवमिति स—देवम्। आसीत् तत्। तदप। अपोत्। उदक्रामत्। अक्रामत् ते।
ते दर्भाः। दर्भा अभवन्न्। अभवन्यत्। यद् दर्भपुञ्जीलैः। दर्भपुञ्जीलैः पवयति। दर्भपुञ्जीलैरिति
दर्भ—पुञ्जीलैः। पवयति याः। या एव। एव मेद्ध्याः। मेद्ध्या यज्ञियाः। यज्ञियाः सदेवाः।
सदेवा आपः। सदेवा इति स—देवाः। आपस्ताभिः। ताभिरेव। एवैनम्। एनम् पवयति। पव-
यति द्वाभ्याम्। द्वाभ्याम् पवयति। पवयत्यहोरात्राभ्याम्। अहोरात्राभ्यामेव। अहोरात्राभ्यामि-
त्यहः—रात्राभ्याम्। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति त्रिभिः। त्रिभिः पवयति। त्रिभिरिति त्रि—
भिः। पवयति त्रयः। त्रय इमे। इमे लोकाः। लोका एभिः। एभिरेव। एवैनम्। एनँल्लोकैः। लोकैः
पवयति। पवयति पञ्चभिः। पञ्चभिः पवयति। पञ्चभिरिति पञ्च—भिः। ॥ [७] ॥ पवयति
पञ्चाख्षरा। पञ्चाख्षरा पङ्क्तिः। पञ्चाख्षरेति पञ्च—अख्षरा। पङ्क्तिः पाङ्क्तः। पाङ्क्तो
यज्ञः। यज्ञो यज्ञाय। यज्ञायैव। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति षड्भिः। षड्भिः पवयति।
षड्भिरिति षट्—भिः। पवयति षट्। षड् वै। वा ऋतवः। ऋतव ऋतुभिः। ऋतुभिरेव। ऋतु-
भिरित्यृतु—भिः। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति सप्तभिः। सप्तभिः पवयति। सप्तभिरिति
सप्त—भिः। पवयति सप्त। सप्त छन्दाꣳसि। छन्दाꣳसि छन्दोभिः। छन्दोभिरेव। छन्दोभिरिति
छन्दः—भिः। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति नवभिः। नवभिः पवयति। नवभिरिति नव—
भिः। पवयति नव। नव वै। वै पुरुषे। पुरुषे प्राणाः। प्राणाः सप्राणम्। प्राणा इति प्र—अनाः।
सप्राणमेव। सप्राणमिति स—प्राणम्। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयत्येकविꣳशत्या। एकविꣳ-
शत्या पवयति। एकविꣳशत्येत्येक—विꣳशत्या। पवयति दश। दश हस्त्याः। हस्त्या अङ्गु-
लयः। अङ्गुलयो दश। दश पद्याः। पद्या आत्मा। आत्मैकविꣳशः। एकविꣳशो यावान्।

एकविꣳश इत्येक—विꣳशः। यावानेव। एव पुरुषः। पुरुषस्तम्। तमपरिवर्गम्। अपरिवर्गम् पवयति। अपरिवर्गमित्यपरि—वर्गम्। ॥ [८] ॥ पवयति चित्पतिः। चित्पतिस्त्वा। चित्पतिरिति चित्—पतिः। त्वा पुनातु। पुनात्विति। इत्याह। आह मनः। मनो वै। वै चित्पतिः। चित्पतिर् मनसा। चित्पतिरिति चित्—पतिः। मनसैव। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति वाक्पतिः। वाक्पतिस्त्वा। वाक्पतिरिति वाक्—पतिः। त्वा पुनातु। पुनात्विति। इत्याह। आह वाचा। वाचैव। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति देवः। देवस्त्वा। त्वा सविता। सविता पुनातु। पुनात्विति। इत्याह। आह सवितृप्रसूतः। सवितृप्रसूत एव। सवितृप्रसूत इति सवितृ—प्रसूतः। एवैनम्। एनम् पवयति। पवयति तस्य। तस्य ते। ते पवित्रपते। पवित्रपते पवित्रेण। पवित्रपत इति पवित्र—पते। पवित्रेण यस्मै। यस्मै कम्। कम् पुने। पुने तत्। तच्छकेयम्। शकेयमिति। इत्याह। आहाशिषम्। आशिषमेव। आशिषमित्या—शिषम्। एवैताम्। एतामा। आ शास्ते। शास्त इति शास्ते॥ ॥ [९] ॥

(अतीकाशान् करोत्य वेशयन् तीर्थे स्नाति प्रघातो मनुष्याणाम् तद्वा आऽङ्क्ते मित्रत्वाय पञ्चभि रपरिवर्ग मष्टाचत्वारिꣳशच्च) ॥ १ ॥

यावन्तो वै। वै देवाः। देवा यज्ञाय। यज्ञायापुनत। अपुनत ते। त एव। एवाभवन्न्। अभवन्यः। य एवम्। एवंविद्वान्। विद्वान्यज्ञाय। यज्ञाय पुनीते। पुनीते भवति। भवत्येव। एव बहिः। बहिः पवयित्वा। पवयित्वाऽन्तः। अन्तः प्र। प्र पादयति। पादयति मनुष्यलोके। मनुष्यलोक एव। मनुष्यलोक इति मनुष्य—लोके। एवैनम्। एनम् पवयित्वा। पवयित्वा पूतम्। पूतम् देवलोकम्। देवलोकम् प्र। देवलोकमिति देव—लोकम्। प्र णयति। नयत्यदीक्षितः। अदीक्षित एकया। एकयाऽऽहुत्या। आहुत्येति। आहुत्येत्या—हुत्या। इत्याहुः। आहुः स्रुवेण। स्रुवेण चतस्रः। चतस्रो जुहोति। जुहोति दीक्षितत्वाय। दीक्षितत्वाय स्रुचा। दीक्षितत्वायेति दीक्षित—त्वाय। स्रुचा पञ्चमीम्। पञ्चमीम् पञ्चाक्षरा। पञ्चाक्षरा पङ्क्तिः। पञ्चाक्षरेति पञ्च—अक्षरा। पङ्क्तिः पाङ्क्तः। पाङ्क्तो यज्ञः। यज्ञो यज्ञम्। यज्ञमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्ध आकूत्यै। आकूत्यै प्रयुजे। आकूत्या इत्या—कूत्यै। प्रयुजेऽग्नये। प्रयुज

इति प्र—युजे। अग्नये स्वाहा। ॥ [१०] ॥ स्वाहेति। इत्याह। आहाकूत्या। आकूत्या हि।
आकूत्येत्या—कूत्या। हि पुरुषः। पुरुषो यज्ञम्। यज्ञमभि। अभि प्रयुङ्क्ते। प्रयुङ्क्ते यजेय।
प्रयुङ्क्त इति प्र—युङ्क्ते। यजेयेति। इति मेधायै। मेधायै मनसे। मनसेऽग्नये। अग्नये स्वाहा।
स्वाहेति। इत्याह। आह मेधया। मेधया हि। हि मनसा। मनसा पुरुषः। पुरुषो यज्ञम्।
यज्ञमभिगच्छति। अभिगच्छति सरस्वत्यै। अभिगच्छतीत्यभि—गच्छति। सरस्वत्यै पूष्णे।
पूष्णेऽग्नये। अग्नये स्वाहा। स्वाहेति। इत्याह। आह वाक्। वाग् वै। वै सरस्वती। सरस्वती
पृथिवी। पृथिवी पूषा। पूषा वाचा। वाचैव। एव पृथिव्या। पृथिव्या यज्ञम्। यज्ञम् प्र। प्र
युङ्क्ते। युङ्क्त आपः। आपो देवीः। देवीर् बृहतीः। बृहतीर् विश्वशम्भुवः। विश्वशम्भुव इति।
विश्वशम्भुव इति विश्व—शम्भुवः। इत्याह। आह याः। या वै। वै वर्ष्याः। वर्ष्यास्ताः। ता
आपः। ॥ [११] ॥ आपो देवीः। देवीर् बृहतीः। बृहतीर् विश्वशम्भुवः। विश्वशम्भुवो यत्।
विश्वशम्भुव इति विश्व—शम्भुवः। यदेतत्। एतद् यजुः। यजुर् न। न ब्रूयात्। ब्रूयाद् दिव्याः।
दिव्या आपः। आपोऽशान्ताः। अशान्ता इमम्। इमँल्लोकम्। लोकमा। आ गच्छेयुः। गच्छे-
युरापः। आपो देवीः। देवीर् बृहतीः। बृहतीर् विश्वशम्भुवः। विश्वशम्भुव इति। विश्वशम्भुव
इति विश्व—शम्भुवः। इत्याह। आहास्मै। अस्मा एव। एवैनाः। एना लोकाय। लोकाय शम-
यति। शमयति तस्मात्। तस्माच्छान्ताः। शान्ता इमम्। इमँल्लोकम्। लोकमा। आ गच्छन्ति।
गच्छन्ति द्यावापृथिवी। द्यावापृथिवी इति। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। इत्याह। आह
द्यावापृथिव्योः। द्यावापृथिव्योर् हि। द्यावापृथिव्योरिति द्यावा—पृथिव्योः। हि यज्ञः। यज्ञ उरु।
उर्वन्तरिक्षम्। अन्तरिक्षमिति। इत्याह। आहान्तरिक्षे। अन्तरिक्षे हि। हि यज्ञः। यज्ञो
बृहस्पतिः। बृहस्पतिर् नः। नो हविषा। हविषा वृधातु। वृधात्विति। ॥ [१२] ॥ इत्याह।
आह ब्रह्म। ब्रह्म वै। वै देवानाम्। देवानाम् बृहस्पतिः। बृहस्पतिर् ब्रह्मणा। ब्रह्मणैव। एवास्मै।
अस्मै यज्ञम्। यज्ञमव। अव रुन्धे। रुन्धे यत्। यद् ब्रूयात्। ब्रूयाद् विधेः। विधेरिति। इति
यज्ञस्थाणुम्। यज्ञस्थाणुमृच्छेत्। यज्ञस्थाणुमिति यज्ञ—स्थाणुम्। ऋच्छेद् वृधातु। वृधात्विति।
इत्याह। आह यज्ञस्थाणुम्। यज्ञस्थाणुमेव। यज्ञस्थाणुमिति यज्ञ—स्थाणुम्। एव परि। परि
वृणक्ति। वृणक्ति प्रजापतिः। प्रजापतिर् यज्ञम्। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। यज्ञमसृजत।

असृजत सः। सोऽस्मात्। अस्माथ् सृष्टः। सृष्टः पराङ्। पराङैत्। ऐथ् सः। स प्र। प्र यजुः। यजुरव्लीनात्। अव्लीनात् प्र। प्र साम। साम तम्। तमृक्। ऋगुत्। उदयच्छत्। अयच्छद् यत्। यदृक्। ऋगुदयच्छत्। उदयच्छत् तत्। उदयच्छदित्युत्—अयच्छत्। तदौद्ग्रहणस्य। औद्ग्रहणस्यौद्,ग्रहणत्वम्। औद्ग्रहणस्येत्यौत्—ग्रहणस्य। औद्ग्रहणत्वमृचा। औद्ग्रहणत्व,मित्यौद्ग्रहण—त्वम्। ऋचा जुहोति। ॥ [१३] ॥ जुहोति यज्ञस्य। यज्ञस्योद्यत्यै। उद्यत्या अनुष्टुप्। उद्यत्या इत्युत्—यत्यै। अनुष्टुप् छन्दसाम्। अनुष्टुबित्यनु—स्तुप्। छन्दसामुत्। उदयच्छत्। अयच्छदिति। इत्याहुः। आहुस्तस्मात्। तस्मादनुष्टुभा। अनुष्टुभा जुहोति। अनुष्टुभेत्यनु—स्तुभा। जुहोति यज्ञस्य। यज्ञस्योद्यत्यै। उद्यत्यै द्वादश। उद्यत्या इत्युत्—यत्यै। द्वादश वाथ्सबन्धानि। वाथ्सबन्धान्युत्। वाथ्सबन्धानीति वाथ्स—बन्धानि। उदयच्छन्। अयच्छन्निति। इत्याहुः। आहुस्तस्मात्। तस्माद् द्वादशभिः। द्वादशभिर् वाथ्सबन्धविदः। द्वादशभिरिति द्वादश—भिः। वाथ्सबन्धविदो दीख्षयन्ति। वाथ्सबन्धविद इति वाथ्सबन्ध—विदः। दीख्षयन्ति सा। सा वै। वा एषा। एषर्क्। ऋगनुष्टुक्। अनुष्टुग् वाक्। अनुष्टुगित्यनु—स्तुक्। वागनुष्टुक्। अनुष्टुग् यत्। अनुष्टुगित्यनु—स्तुक्। यदेतया। एतयर्चा। ऋचा दीख्षयति। दीख्षयति वाचा। वाचैव। एवैनम्। एनꣳ सर्वया। सर्वया दीख्षयति। दीख्षयति विश्वे। विश्वे देवस्य। देवस्य नेतुः। नेतुरिति। इत्याह। आह सावित्री। सावित्र्येतेन। एतेन मर्तः। मर्तो वृणीत। वृणीत सख्यम्। सख्यमिति। ॥ [१४] ॥ इत्याह। आह पितृदेवत्या। पितृदेवत्यैतेन। पितृदेवत्येति पितृ—देवत्या। एतेन विश्वे। विश्वे रायः। राय इषुद्ध्यसि। इषुद्ध्यसीति। इत्याह। आह वैश्वदेवी। वैश्वदेव्येतेन। वैश्वदेवीति वैश्व—देवी। एतेन द्युम्नम्। द्युम्नँवृणीत। वृणीत पुष्यसे। पुष्यस इति। इत्याह। आह पौष्णी। पौष्ण्येतेन। एतेन सा। सा वै। वा एषा। एषर्क्। ऋख् सर्वदेवत्या। सर्वदेवत्या यत्। सर्वदेवत्येति सर्व—देवत्या। यदेतया। एतयर्चा। ऋचा दीख्षयति। दीख्षयति सर्वाभिः। सर्वाभिरेव। एवैनम्। एनम् देवताभिः। देवताभिर् दीख्षयति। दीख्षयति सप्ताख्षरम्। सप्ताख्षरम् प्रथमम्। सप्ताख्षरमिति सप्त—अख्षरम्। प्रथमम् पदम्। पदमष्टाख्षराणि। अष्टाख्षराणि त्रीणि। अष्टाख्षराणीत्यष्टा—अख्षराणि। त्रीणि यानि। यानि त्रीणि। त्रीणि तानि। तान्यष्टौ। अष्टावुप। उप यन्ति। यन्ति यानि। यानि चत्वारि। चत्वारि तानि।

तान्यष्टौ। अष्टौ यत्। यदष्टाख्षरा। अष्टाख्षरा तेन। अष्टाख्षरेत्यष्टा—अख्षरा। तेन गायत्री। ॥ [१५] ॥ गायत्री यत्। यदेकादशाख्षरा। एकादशाख्षरा तेन। एकादशाख्षरेत्येकादश— अख्षरा। तेन त्रिष्टुक्। त्रिष्टुग् यत्। यद् द्वादशाख्षरा। द्वादशाख्षरा तेन। द्वादशाख्षरेति द्वादश—अख्षरा। तेन जगती। जगती सा। सा वै। वा एषा। एषर्क्। ऋख् सर्वाणि। सर्वाणि छन्दाꣳसि। छन्दाꣳसि यत्। यदेतया। एतयर्चा। ऋचा दीख्षयति। दीख्षयति सर्वैभिः। सर्वै-भिरेव। एवैनम्। एनम् छन्दोभिः। छन्दोभिर् दीख्षयति। छन्दोभिरिति छन्दः—भिः। दीख्ष-यति सप्ताख्षरम्। सप्ताख्षरम् प्रथमम्। सप्ताख्षरमिति सप्त—अख्षरम्। प्रथमम् पदम्। पदꣳ सप्तपदा। सप्तपदा शक्वरी। सप्तपदेति सप्त—पदा। शक्वरी पशवः। पशवः शक्वरी। शक्वरी पशून्। पशूनेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्ध एकस्मात्। एकस्मादख्षरात्। अख्षरादनाप्तम्। अनाप्तम् प्रथमम्। प्रथमम् पदम्। पदम् तस्मात्। तस्माद् यत्। यद् वाचः। वाचोऽनाप्तम्। अनाप्तम् तत्। तन् मनुष्याः। मनुष्या उप। उप जीवन्ति। जीवन्ति पूर्णया। पूर्णया जुहोति। जुहोति पूर्णः। पूर्ण इव। इव हि। हि प्रजापतिः। प्रजापतिः प्रजापतेः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। प्रजापतेराप्त्यै। प्रजापतेरिति प्रजा—पतेः। आप्त्यै न्यूनया। न्यूनया जुहोति। न्यूनयेति नि—ऊनया। जुहोति न्यूनात्। न्यूनादधि। न्यूनादिति नि—ऊनात्। हि प्रजापतिः। प्रजापतिः प्रजाः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। प्रजा असृजत। प्रजा इति प्र—जाः। असृजत प्रजानाम्। प्रजानाꣳ सृष्ट्यै। प्रजानामिति प्र—जानाम्। सृष्ट्या इति सृष्ट्यै॥ ॥ [१६] ॥

(अग्नये ता वृधात्वृ चा सख्यम् तेन जुहोति पञ्चदश च) ॥ २ ॥

ऋख्सामे वै। ऋख्सामे इत्यृक्—सामे। वै देवेभ्यः। देवेभ्यो यज्ञाय। यज्ञायातिष्ठमाने। अतिष्ठमाने कृष्णः। अतिष्ठमाने इत्यतिष्ठमाने। कृष्णो रूपम्। रूपम् कृत्वा। कृत्वाऽपक्रम्य। अपक्रम्यातिष्ठताम्। अपक्रम्येत्यप—क्रम्य। अतिष्ठताम् ते। तेऽमन्यन्त। अमन्यन्त यम्। यँवै। वा इमे। इमे उपावथ्स्यतः। इमे इतीमे। उपावथ्स्यतः सः। उपावथ्स्यत इत्युप— आवथ्स्यतः। स इदम्। इदम् भविष्यति। भविष्यतीति। इति ते। ते उप। ते इति ते। उपा-मन्त्रयन्त। अमन्त्रयन्त ते। ते अहोरात्रयोः। ते इति ते। अहोरात्रयोर् महिमानम्। अहोरा-

त्रयोरित्यहः—रात्रयोः। महिमानमपनिधाय। अपनिधाय देवान्। अपनिधायेत्यप—निधाय। देवानुपावर्तेताम्। उपावर्तेतामेषः। उपावर्तेतामित्युप—आवर्तेताम्। एष वै। वा ऋचः। ऋचो वर्णः। वर्णो यत्। यच्छुक्लम्। शुक्लम् कृष्णाजिनस्य। कृष्णाजिनस्यैषः। कृष्णाजिनस्येति कृष्ण—अजिनस्य। एष साम्नः। साम्नो यत्। यत् कृष्णम्। कृष्णमृख्सामयोः। ऋख्सामयोः शिल्पे। ऋख्सामयोरित्यृक्—सामयोः। शिल्पे स्थः। शिल्पे इति शिल्पे। स्थ इति। इत्याह। आहर्ख्सामे। ऋख्सामे एव। ऋख्सामे इत्यृक्—सामे। एवाव। अव रुन्धे। रुन्ध एषः। एष वै। ॥ [१७] ॥ वा अह्नः। अह्नो वर्णः। वर्णो यत्। यच्छुक्लम्। शुक्लम् कृष्णाजिनस्य। कृष्णाजिनस्यैषः। कृष्णाजिनस्येति कृष्ण—अजिनस्य। एष रात्रियाः। रात्रिया यत्। यत् कृष्णम्। कृष्णय्ँयत्। यदेव। एवैनयोः। एनयोस्तत्र। तत्र न्यक्तम्। न्यक्तम् तत्। न्यक्तमिति नि—अक्तम्। तदेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे कृष्णाजिनेन। कृष्णाजिनेन दीख्षयति। कृष्णाजिनेनेति कृष्ण—अजिनेन। दीख्षयति ब्रह्मणः। ब्रह्मणो वै। वा एतत्। एतद् रूपम्। रूपय्ँयत्। यत् कृष्णाजिनम्। कृष्णाजिनम् ब्रह्मणा। कृष्णाजिनमिति कृष्ण—अजिनम्। ब्रह्मणैव। एवैनम्। एनम् दीख्षयति। दीख्षयतीमाम्। इमाम् धियम्। धियꣳ शिख्षमाणस्य। शिख्षमाणस्य देव। देवेति। इत्याह। आह यथायजुः। यथायजुरेव। यथायजुरिति यथा—यजुः। एवैतत्। एतद् गर्भः। गर्भो वै। वा एषः। एष यत्। यद् दीख्षितः। दीख्षित उल्बम्। उल्बव्ँवासः। वासः प्र। प्रोर्णुते। ऊर्णुते तस्मात्। तस्माद् गर्भाः। ॥ [१८] ॥ गर्भाः प्रावृताः। प्रावृता जायन्ते। जायन्ते न। न पुरा। पुरा सोमस्य। सोमस्य क्रयात्। क्रयादप। अपोर्ण्वीत। ऊर्ण्वीत यत्। यत् पुरा। पुरा सोमस्य। सोमस्य क्रयात्। क्रयादपोर्ण्वीत। अपोर्ण्वीत गर्भाः। अपोर्ण्वीतेत्यप—ऊर्ण्वीत। गर्भाः प्रजानाम्। प्रजानाम् परापातुकाः। प्रजानामिति प्र—जानाम्। परापातुकाः स्युः। परापातुका इति परा—पातुकाः। स्युः क्रीते। क्रीते सोमे। सोमेऽप। अपोर्णुते। ऊर्णुते जायते। जायत एव। एव तत्। तदथो। अथो यथा। अथो इत्यथो। यथा वसीयाꣳसम्। वसीयाꣳसम् प्रत्यपोर्णुते। प्रत्यपोर्णुते तादृक्। प्रत्यपोर्णुत इति प्रति—अपोर्णुते। तादृगेव। एव तत्। तदङ्गिरसः। अङ्गिरसः सुवर्गम्। सुवर्गल्ँलोकम्। सुवर्गमिति सुवः—गम्। लोकय्ँयन्तः। यन्त ऊर्जम्। ऊर्जव्ँवि। व्यभजन्त। अभजन्त ततः। ततो यत्। यदत्यशिष्यत। अत्यशि-

ष्यत ते। अत्यशिष्यतेत्यति—अशिष्यत। ते शराः। शरा अभवन्न्। अभवन्नूर्क्। ऊर्ग् वै।
वै शराः। शरा यत्। यच्छरमयी। शरमयी मेखला। शरमयीति शर—मयी। ॥ [१९] ॥
मेखला भवति। भवत्यूर्जम्। ऊर्जमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे मद्ध्यतः। मद्ध्यतः सम्।
सम् नह्यति। नह्यति मद्ध्यतः। मद्ध्यत एव। एवास्मै। अस्मा ऊर्जम्। ऊर्जम् दधाति। दधाति
तस्मात्। तस्मान् मद्ध्यतः। मद्ध्यत ऊर्जा। ऊर्जा भुञ्जते। भुञ्जत ऊर्द्ध्वम्। ऊर्द्ध्वव्वँै। वै पुरु-
षस्य। पुरुषस्य नाभ्यै। नाभ्यै मेद्ध्यम्। मेद्ध्यमवाचीनम्। अवाचीनममेद्ध्यम्। अमेद्ध्यय्यँत्।
यन् मद्ध्यतः। मद्ध्यतः सन्नह्यति। सन्नह्यति मेद्ध्यम्। सन्नह्यतीति सम्—नह्यति। मेद्ध्यम् च।
चैव। एवास्य। अस्यामेद्ध्यम्। अमेद्ध्यम् च। च व्यावर्तयति। व्यावर्तयतीन्द्रः। व्यावर्तयतीति
वि—आवर्तयति। इन्द्रो वृत्राय। वृत्राय वज्रम्। वज्रम् प्र। प्राहरत्। अहरथ् सः। स त्रेधा।
त्रेधा वि। व्यभवत्। अभवथ् स्फ्यः। स्फ्यस्तृतीयम्। तृतीयꣳ रथः। रथस्तृतीयम्। तृतीय-
य्यूँपः। यूपस्तृतीयम्। तृतीयय्यँे। ॥ [२०] ॥ येऽन्तश्शराः। अन्तश्शरा अशीर्यन्त। अन्त-
श्शरा इत्यन्तः—शराः। अशीर्यन्त ते। ते शराः। शरा अभवन्न्। अभवन् तत्। तच्छराणाम्।
शराणाꣳ शरत्वम्। शरत्वव्वँज्रः। शरत्वमिति शर—त्वम्। वज्रो वै। वै शराः। शराः ख्षुत्।
ख्षुत् खलु। खलु वै। वै मनुष्यस्य। मनुष्यस्य भ्रातृव्यः। भ्रातृव्यो यत्। यच्छरमयी। शरमयी
मेखला। शरमयीति शर—मयी। मेखला भवति। भवति वज्रेण। वज्रेणैव। एव साख्षात्।
साख्षात् ख्षुधम्। साख्षादिति स—अख्षात्। ख्षुधम् भ्रातृव्यम्। भ्रातृव्यम् मद्ध्यतः।
मद्ध्यतोऽप। अप हते। हते त्रिवृत्। त्रिवृद् भवति। त्रिवृदिति त्रि—वृत्। भवति त्रिवृत्। त्रिवृद्
वै। त्रिवृदिति त्रि—वृत्। वै प्राणः। प्राणस्त्रिवृतम्। प्राण इति प्र—अनः। त्रिवृतमेव। त्रिवृतमिति
त्रि—वृतम्। एव प्राणम्। प्राणम् मद्ध्यतः। प्राणमिति प्र—अनम्। मद्ध्यतो यजमाने। यजमाने
दधाति। दधाति पृथ्वी। पृथ्वी भवति। भवति रज्जूनाम्। रज्जूनाव्वँ्यावृत्त्यै। व्यावृत्त्यै मेख-
लया। व्यावृत्त्या इति वि—आवृत्त्यै। मेखलया यजमानम्। यजमानम् दीख्षयति। दीख्षयति
योक्त्रेण। योक्त्रेण पत्नीम्। पत्नीम् मिथुनत्वाय। मिथुनत्वाय यज्ञः। मिथुनत्वायेति मिथुन—
त्वाय। ॥ [२१] ॥ यज्ञो दख्षिणाम्। दख्षिणामभि। अभ्यद्ध्यायत्। अद्ध्यायत् ताम्। ताꣳ
सम्। समभवत्। अभवत् तत्। तदिन्द्रः। इन्द्रोऽचायत्। अचायथ् सः। सोऽमन्यत। अमन्यत

यः। यो वै। वा इतः। इतो जनिष्यते। जनिष्यते सः। स इदम्। इदम् भविष्यति। भविष्यतीति। इति ताम्। ताम् प्र। प्राविशत्। अविशत् तस्याः। तस्या इन्द्रः। इन्द्र एव। एवाजायत। अजायत सः। सोऽमन्यत। अमन्यत यः। यो वै। वै मत्। मदितः। इतोऽपरः। अपरो जनिष्यते। जनिष्यते सः। स इदम्। इदम् भविष्यति। भविष्यतीति। इति तस्याः। तस्या अनुमृश्य। अनुमृश्य योनिम्। अनुमृश्येत्यनु—मृश्य। योनिमा। आऽच्छिनत्। अच्छिनथ् सा। सा सूतवशा। सूतवशाऽभवत्। सूतवशेति सूत—वशा। अभवत् तत्। तथ् सूतवशायै। सूतवशायै जन्म। सूतवशाया इति सूत—वशायै। जन्म ताम्। ॥ [२२] ॥ ताꣳ हस्ते। हस्ते नि। न्यवेष्टयत। अवेष्टयत ताम्। ताम् मृगेषु। मृगेषु नि। न्यदधात्। अदधाथ् सा। सा कृष्णविषाणा। कृष्णविषाणाऽभवत्। कृष्णविषाणेति कृष्ण—विषाणा। अभवदिन्द्रस्य। इन्द्रस्य योनिः। योनिरसि। असि मा। मा मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीरिति। इति कृष्णविषाणाम्। कृष्णविषाणाम् प्र। कृष्णविषाणामिति कृष्ण—विषाणाम्। प्र यच्छति। यच्छति सयोनिम्। सयोनिमेव। सयोनिमिति स—योनिम्। एव यज्ञम्। यज्ञम् करोति। करोति सयोनिम्। सयोनिम् दक्षिणाम्। सयोनिमिति स—योनिम्। दक्षिणाꣳ सयोनिम्। सयोनिमिन्द्रम्। सयोनिमिति स—योनिम्। इन्द्रꣳ सयोनित्वाय। सयोनित्वाय कृष्यै। सयोनित्वायेति सयोनि—त्वाय। कृष्यै त्वा। त्वा सुसस्यायै। सुसस्याया इति। सुसस्याया इति सु—सस्यायै। इत्याह। आह तस्मात्। तस्मादकृष्टपच्याः। अकृष्टपच्या ओषधयः। अकृष्टपच्या इत्यकृष्ट—पच्याः। ओषधयः पच्यन्ते। पच्यन्ते सुपिप्पलाभ्यः। सुपिप्पलाभ्यस्त्वा। सुपिप्पलाभ्य इति सु—पिप्पलाभ्यः। त्वौषधीभ्यः। ओषधीभ्य इति। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। इत्याह। आह तस्मात्। तस्मादोषधयः। ओषधयः फलम्। फलम् गृह्णन्ति। गृह्णन्ति यत्। यद्धस्तेन। हस्तेन कण्डूयेत। ॥ [२३] ॥ कण्डूयेत पामनम्भावुकाः। पामनम्भावुकाः प्रजाः। पामनम्भावुका इति पामनम्—भावुकाः। प्रजाः स्युः। प्रजा इति प्र—जाः। स्युर् यत्। यथ् स्मयेत। स्मयेत नग्नम्भावुकाः। नग्नम्भावुकाः कृष्णविषाणया। नग्नम्भावुका इति नग्नम्—भावुकाः। कृष्णविषाणया कण्डूयते। कृष्णविषाणयेति कृष्ण—विषाणया। कण्डूयतेऽपिगृह्य। अपिगृह्य स्मयते। अपिगृह्येत्यपि—गृह्य। स्मयते प्रजानाम्। प्रजानाम् गोपीथाय। प्रजानामिति प्र—जानाम्। गोपीथाय न। न पुरा। पुरा दक्षि-

णाभ्यः। दक्षि॑णाभ्यो॒ नेतो᳚ः। नेतो᳚ः कृष्णविषा॒णाम्। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णामव॑। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णामिति॑
कृष्ण—वि॒षा॒णाम्। अव॑ चृतेत्। चृ॒ते॒द् यत्। यत् पु॒रा। पु॒रा दक्षि॑णाभ्यः। दक्षि॑णाभ्यो॒ नेतो᳚ः।
नेतो᳚ः कृष्णविषा॒णाम्। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णाम॑वचृतेत्। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णामिति॑ कृष्ण—वि॒षा॒णाम्। अ॒व॒-
चृतेद् योनि॑ः। अ॒व॒चृ॒तेदित्य॑व—चृतेत्। योनि॑ः प्र॒जाना᳚म्। प्र॒जाना᳚म् परा॒पातु॑का। प्र॒जाना॒मिति॑
प्र—जाना᳚म्। प॒रा॒पातु॑का स्यात्। प॒रा॒पा॒तु॒केति॑ परा—पातु॑का। स्यान् नी॒तासु॑। नी॒तासु॒ दक्षि॑-
णासु। दक्षि॑णासु॒ चात्वा॑ले। चात्वा॑ले कृष्णविषा॒णाम्। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णाम् प्र। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णामिति॑
कृष्ण—वि॒षा॒णाम्। प्रास्य॑ति। अ॒स्य॒ति॒ योनि॑ः। योनि॒र् वै। वै य॒ज्ञस्य॑। य॒ज्ञस्य॒ चात्वा॑लम्।
चात्वा॑ल॒य्ँयोनि॑ः। योनि॑ः कृष्णविषा॒णा। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णा योनौ᳚। कृ॒ष्ण॒वि॒षा॒णेति॑ कृष्ण—वि॒षा॒णा।
योना॑वेव। ए॒व योनि᳚म्। योनि॑म् द॒धाति। द॒धा॒ति॒ य॒ज्ञस्य॑। य॒ज्ञस्य॑ सयोनि॒त्वाय॑। स॒यो॒नि॒त्वायेति॑
सयोनि—त्वाय॑॥ ॥ [२४] ॥

(रु॒न्ध॒ ए॒ष तस्मा᳚ च्छ॒रम॒यी॒ यू॒पस्तृ॒तीय॑म् मिथु॒नत्वा॒य जन्म॒ हस्ते॑ना॒ ऽष्टाच॑त्वारिꣳशच्च) ॥ ३ ॥

वाग् वै। वै दे॒वेभ्य॑ः। दे॒वेभ्योऽप॑। अपा᳚क्रामत्। अ॒क्रा॒म॒द् य॒ज्ञाय॑। य॒ज्ञाया॒तिष्ठ॑माना। अति॑-
ष्ठमाना॒ सा। सा व॒नस्पती॑न्। व॒नस्पती॒न् प्र। प्रावि॑शत्। अ॒वि॒श॒थ् सा। सैषा। ए॒षा वाक्। वाग्
व॒नस्पति॑षु। व॒नस्पति॑षु वद॑ति। व॒द॒ति॒ या। या दु॑न्दु॒भौ। दु॒न्दु॒भौ या। या तूण॑वे। तूण॑वे॒ या।
या वीणा॑याम्। वीणा॑या॒य्ँयत्। यद् दी᳚क्षितद॒ण्डम्। दी॒क्षि॒त॒द॒ण्डम् प्र॒यच्छ॑ति। दी॒क्षि॒त॒द॒ण्ड-
मिति॑ दीक्षित—द॒ण्डम्। प्र॒यच्छ॑ति॒ वाच᳚म्। प्र॒यच्छ॒तीति॑ प्र—यच्छ॑ति। वाच॑मे॒व। ए॒वाव॑। अव॑
रुन्धे। रु॒न्ध॒ औदु॑म्बरः। औदु॑म्बरो भवति। भ॒व॒त्यू॒र्क्। ऊर्ग् वै। वा उ॑दु॒म्बर॑ः। उ॒दु॒म्ब॒र ऊर्ज᳚म्।
ऊर्ज॑मे॒व। ए॒वाव॑। अव॑ रुन्धे। रु॒न्धे॒ मुखे॑न। मुखे॑न॒ सम्मि॑तः। सम्मि॑तो भवति। सम्मि॑त॒ इति॑
सम्—मि॒तः। भ॒व॒ति॒ मु॒ख॒तः। मु॒ख॒त ए॒व। ए॒वास्मै᳚। अ॒स्मा॒ ऊर्ज᳚म्। ऊर्ज॑म् दधाति। द॒धा॒ति॒
तस्मा᳚त्। तस्मा᳚न् मु॒ख॒तः। मु॒ख॒त ऊ॒र्जा। ऊ॒र्जा भु॑ञ्जते। भु॒ञ्ज॒ते॒ क्री॒ते। ॥ [२५] ॥ क्री॒ते
सोमे᳚। सोमे॑ मैत्रावरु॒णाय॑। मै॒त्रा॒व॒रु॒णाय॑ द॒ण्डम्। मै॒त्रा॒व॒रु॒णायेति॑ मैत्रा—व॒रु॒णाय॑। द॒ण्डम्
प्र। प्र य॑च्छति। य॒च्छ॒ति॒ मै॒त्रा॒व॒रु॒णः। मै॒त्रा॒व॒रु॒णो हि। मै॒त्रा॒व॒रु॒ण इति॑ मैत्रा—व॒रु॒णः। हि
पु॒रस्ता᳚त्। पु॒रस्ता॑दृ॒त्विग्भ्य॑ः। ऋ॒त्विग्भ्यो॒ वाच᳚म्। ऋ॒त्विग्भ्य॒ इत्यृ॒त्विक्—भ्यः। वाच॑व्वि॒भ-

जति। विभजति ताम्। विभजतीति वि—भजति। तामृत्विजः। ऋत्विजो यजमाने। यजमाने प्रति। प्रति ष्ठापयन्ति। स्थापयन्ति स्वाहा। स्वाहा यज्ञम्। यज्ञम् मनसा। मनसेति। इत्याह। आह मनसा। मनसा हि। हि पुरुषः। पुरुषो यज्ञम्। यज्ञमभिगच्छति। अभिगच्छति स्वाहा। अभिगच्छतीत्यभि—गच्छति। स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याम्। द्यावापृथिवीभ्यामिति। द्यावापृथिवीभ्यामिति द्यावा—पृथिवीभ्याम्। इत्याह। आह द्यावापृथिव्योः। द्यावापृथिव्योर्हि। द्यावापृथिव्योरिति द्यावा—पृथिव्योः। हि यज्ञः। यज्ञः स्वाहा। स्वाहोरोः। उरोरन्तरिक्षात्। अन्तरिक्षादिति। इत्याह। आहान्तरिक्षे। अन्तरिक्षे हि। हि यज्ञः। यज्ञः स्वाहा। स्वाहा यज्ञम्। यज्ञँव्वातात्। वातादा। आ रभे। रभ इति। इत्याह। आहायम्। अयँव्वाव। ॥ [२६] ॥ वाव यः। यः पवते। पवते सः। स यज्ञः। यज्ञस्तम्। तमेव। एव साक्षात्। साक्षादा। साक्षादिति स—अक्षात्। आ रभते। रभते मुष्टी। मुष्टी करोति। मुष्टी इति मुष्टी। करोति वाचम्। वाचँय्यच्छति। यच्छति यज्ञस्य। यज्ञस्य धृत्यै। धृत्या अदीक्षिष्ट। अदीक्षिष्टायम्। अयम् ब्राह्मणः। ब्राह्मण इति। इति त्रिः। त्रिरुपाꣳशु। उपाꣳश्वाह। उपाꣳश्वित्युप—अꣳशु। आह देवेभ्यः। देवेभ्य एव। एवैनम्। एनम् प्र। प्राह। आह त्रिः। त्रिरुच्चैः। उच्चैरुभयेभ्यः। उभयेभ्य एव। एवैनम्। एनम् देवमनुष्येभ्यः। देवमनुष्येभ्यः प्र। देवमनुष्येभ्य इति देव—मनुष्येभ्यः। प्राह। आह न। न पुरा। पुरा नक्षत्रेभ्यः। नक्षत्रेभ्यो वाचम्। वाचँव्वि। वि सृजेत्। सृजेद् यत्। यत् पुरा। पुरा नक्षत्रेभ्यः। नक्षत्रेभ्यो वाचम्। वाचँव्विसृजेत्। विसृजेद् यज्ञम्। विसृजेदिति वि—सृजेत्। यज्ञँव्वि। विच्छिन्द्यात्। छिन्द्यादुदितेषु। ॥ [२७] ॥ उदितेषु नक्षत्रेषु। उदितेष्वित्युत्—इतेषु। नक्षत्रेषु व्रतम्। व्रतम् कृणुत। कृणुतेति। इति वाचम्। वाचँव्वि। वि सृजति। सृजति यज्ञव्रतः। यज्ञव्रतो वै। यज्ञव्रत इति यज्ञ—व्रतः। वै दीक्षितः। दीक्षितो यज्ञम्। यज्ञमेव। एवाभि। अभि वाचम्। वाचँव्वि। वि सृजति। सृजति यदि। यदि विसृजेत्। विसृजेद् वैष्णवीम्। विसृजेदिति वि—सृजेत्। वैष्णवीमृचम्। ऋचमनु। अनु ब्रूयात्। ब्रूयाद् यज्ञः। यज्ञो वै। वै विष्णुः। विष्णुर् यज्ञेन। यज्ञेनैव। एव यज्ञम्। यज्ञꣳ सम्। सम् तनोति। तनोति दैवीम्। दैवीम् धियम्। धियम् मनामहे। मनामह इति। इत्याह। आह यज्ञम्। यज्ञमेव। एव तत्। तन् म्रदयति। म्रदयति सुपारा। सुपारा नः। सुपारेति सु—पारा। नो असत्।

असद् वशे। वश इति। इत्याह। आह व्युष्टिम्। व्युष्टिमेव। व्युष्टिमिति वि—उष्टिम्। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे ब्रह्मवादिनः। ॥ [२८] ॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति। ब्रह्मवादिन इति ब्रह्म—वादिनः। वदन्ति होतव्यम्। होतव्यम् दीक्षितस्य। दीक्षितस्य गृहा(३)इ। गृहा(३)इ न। न होतव्या(३)म्। होतव्या(३)मिति। इति हविः। हविर् वै। वै दीक्षितः। दीक्षितो यत्। यज् जुहुयात्। जुहुयाद् यजमानस्य। यजमानस्यावदाय। अवदाय जुहुयात्। अवदायेत्यव—दाय। जुहुयाद् यत्। यन् न। न जुहुयात्। जुहुयाद् यज्ञपरुः। यज्ञपरुरन्तः। यज्ञपरुरिति यज्ञ—परुः। अन्तरियात्। इयाद् ये। ये देवाः। देवा मनोजाताः। मनोजाता मनोयुजः। मनोजाता इति मनः—जाताः। मनोयुज इति। मनोयुज इति मनः—युजः। इत्याह। आह प्राणाः। प्राणा वै। प्राणा इति प्र—अनाः। वै देवाः। देवा मनोजाताः। मनोजाता मनोयुजः। मनोजाता इति मनः—जाताः। मनोयुजस्तेषु। मनोयुज इति मनः—युजः। तेष्वेव। एव परोक्षम्। परोक्षम् जुहोति। परोक्षमिति परः—अक्षम्। जुहोति तत्। तन् न। नेव। इव हुतम्। हुतम् न। नेव। इवाहुतम्। अहुतꣳ स्वपन्तम्। स्वपन्तवै। वै दीक्षितम्। दीक्षितꣳ रक्षाꣳसि। रक्षाꣳसि जिघाꣳसन्ति। जिघाꣳसन्त्यग्निः। अग्निः खलु। ॥ [२९] ॥ खलु वै। वै रक्षोहा। रक्षो-हाऽग्ने। रक्षोहेति रक्षः—हा। अग्ने त्वम्। त्वꣳ सु। सु जागृहि। जागृहि वयम्। वयꣳ सु। सु मन्दिषीमहि। मन्दिषीमहीति। इत्याह। आहाग्निम्। अग्निमेव। एवाधिपाम्। अधिपाम् कृत्वा। अधिपामित्यधि—पाम्। कृत्वा स्वपिति। स्वपिति रक्षसाम्। रक्षसामपहत्यै। अप-हत्या अव्रत्यम्। अपहत्या इत्यप—हत्यै। अव्रत्यमिव। इव वै। वा एषः। एष करोति। करोति यः। यो दीक्षितः। दीक्षितः स्वपिति। स्वपिति त्वम्। त्वमग्ने। अग्ने व्रतपाः। व्रतपा असि। व्रतपा इति व्रत—पाः। असीति। इत्याह। आहाग्निः। अग्निर् वै। वै देवानाम्। देवानाव्ँव्रत-पतिः। व्रतपतिः सः। व्रतपतिरिति व्रत—पतिः। स एव। एवैनम्। एनव्ँव्रतम्। व्रतमा। आ लम्भयति। लम्भयति देवः। देव आ। आ मर्त्येषु। मर्त्येष्वा। एति। इत्याह। आह देवः। देवो हि। ॥ [३०] ॥ ह्येषः। एष सन्न्। सन् मर्त्येषु। मर्त्येषु त्वम्। त्वय्ँयज्ञेषु। यज्ञेष्वीड्यः। ईड्य इति। इत्याह। आहैतम्। एतꣳ हि। हि यज्ञेषु। यज्ञेष्वीडते। ईडतेऽप। अप वै। वै दीक्षितात्। दीक्षितात् सुषुपुषः। सुषुपुष इन्द्रियम्। इन्द्रियम् देवताः। देवताः क्रामन्ति।

क्रामन्ति विश्वे। विश्वे देवाः। देवा अभि। अभि माम्। मामा। आऽववृत्रन्न्। अववृत्रन्निति। इत्याह। आहेन्द्रियेण। इन्द्रियेणैव। एवैनम्। एनम् देवताभिः। देवताभिः सम्। सम् नयति। नयति यत्। यदेतत्। एतद् यजुः। यजुर् न। न ब्रूयात्। ब्रूयाद् यावतः। यावत एव। एव पशून्। पशूनभि। अभि दीख्षेत। दीख्षेत तावन्तः। तावन्तोऽस्य। अस्य पशवः। पशवः स्युः। स्यूरास्व। रास्वेयत्। इयथ् सोम। ॥ [३१] ॥ सोमा। आ भूयः। भूयो भर। भरेति। इत्याह। आहापरिमितान्। अपरिमितानेव। अपरिमितानित्यपरि—मितान्। एव पशून्। पशू-नव। अव रुन्धे। रुन्धे चन्द्रम्। चन्द्रमसि। असि मम। मम भोगाय। भोगाय भव। भवेति। इत्याह। आह यथादेवतम्। यथादेवतमेव। यथादेवतमिति यथा—देवतम्। एवैनाः। एनाः प्रति। प्रति गृह्णाति। गृह्णाति वायवे। वायवे त्वा। त्वा वरुणाय। वरुणाय त्वा। त्वेति। इति यत्। यदेवम्। एवमेताः। एता न। नानुदिशेत्। अनुदिशेदयथादेवतम्। अनुदिशेदित्यनु—दिशेत्। अयथादेवतम् दख्षिणाः। अयथादेवतमित्ययथा—देवतम्। दख्षिणा गमयेत्। गम-येदा। आ देवताभ्यः। देवताभ्यो वृश्च्येत। वृश्च्येत यत्। यदेवम्। एवमेताः। एता अनुदिशति। अनुदिशति यथादेवतम्। अनुदिशतीत्यनु—दिशति। यथादेवतमेव। यथादेवतमिति यथा—देवतम्। एव दख्षिणाः। दख्षिणा गमयति। गमयति न। न देवताभ्यः। देवताभ्य आ। आ वृश्च्यते। ॥ [३२] ॥ वृश्च्यते देवीः। देवीरापः। आपो अपाम्। अपाम् नपात्। नपादिति। इत्याह। आह यत्। यद् वः। वो मेद्ध्यम्। मेद्ध्यय्यँज्ञियम्। यज्ञियᳲ सदेवम्। सदेवम् तत्। सदेवमिति स—देवम्। तद् वः। वो मा। माऽव। अव क्रमिषम्। क्रमिषमिति। इति वाव। वावैतत्। एतदाह। आहाच्छिन्नम्। अच्छिन्नम् तन्तुम्। तन्तुम् पृथिव्याः। पृथिव्या अनु। अनु गेषम्। गेषमिति। इत्याह। आह सेतुम्। सेतुमेव। एव कृत्वा। कृत्वाऽति। अत्येति। एती-त्येति॥ ॥ [३३] ॥

(भुञ्जते ऽयम् छिन्द्याद् रुन्धे ऽग्नि राह देव इयद् देवताभ्य आ त्रयस्त्रिᳲशच्च) ॥ ४ ॥

देवा वै। वै देवयजनम्। देवयजनमद्ध्यवसाय। देवयजनमिति देव—यजनम्। अद्ध्य-वसाय दिशः। अद्ध्यवसायेत्यधि—अवसाय। दिशो न। न प्र। प्राजानन्न्। अजानन् ते।

ते(१)ऽन्यः। अन्योऽन्यम्। अन्यमुप। उपाधावन्न्। अधावन् त्वया। त्वया प्र। प्र जानाम। जानाम त्वया। त्वयेति। इति ते। तेऽदित्याम्। अदित्याꣳ सम्। समद्ध्रियन्त। अद्ध्रियन्त त्वया। त्वया प्र। प्र जानाम। जानामेति। इति सा। साऽब्रवीत्। अब्रवीद् वरम्। वरँव्वृणै। वृणै मत्प्रायणाः। मत्प्रायणा एव। मत्प्रायणा इति मत्—प्रायणाः। एव वः। वो यज्ञाः। यज्ञा मदुदयनाः। मदुदयना असन्न्। मदुदयना इति मत्—उदयनाः। असन्निति। इति तस्मात्। तस्मादादित्यः। आदित्यः प्रायणीयः। प्रायणीयो यज्ञानाम्। प्रायणीय इति प्र—अयनीयः। यज्ञानामादित्यः। आदित्य उदयनीयः। उदयनीयः पञ्च। उदयनीय इत्युत्—अयनीयः। पञ्च देवताः। देवता यजति। यजति पञ्च। पञ्च दिशः। दिशो दिशाम्। दिशाम् प्रज्ञात्यै। प्रज्ञात्या अथो। प्रज्ञात्या इति प्र—ज्ञात्यै। ॥ [३४] ॥ अथो पञ्चाक्षरा। अथो इत्यथो। पञ्चाक्षरा पङ्क्तिः। पञ्चाक्षरेति पञ्च—अक्षरा। पङ्क्तिः पाङ्क्तः। पाङ्क्तो यज्ञः। यज्ञो यज्ञम्। यज्ञमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे पथ्याम्। पथ्याꣳ स्वस्तिम्। स्वस्तिमयजन्न्। अयजन् प्राचीम्। प्राचीमेव। एव तया। तया दिशम्। दिशम् प्र। प्राजानन्न्। अजानन्नग्निना। अग्निना दक्षिणा। दक्षिणा सोमेन। सोमेन प्रतीचीम्। प्रतीचीꣳ सवित्रा। सवित्रोदीचीम्। उदीची-मदित्या। अदित्योद्ध्र्वाम्। ऊद्ध्र्वाम् पथ्याम्। पथ्याꣳ स्वस्तिम्। स्वस्तिँय्यजति। यजति प्राचीम्। प्राचीमेव। एव तया। तया दिशम्। दिशम् प्र। प्र जानाति। जानाति पथ्याम्। पथ्याꣳ स्वस्तिम्। स्वस्तिमिष्ट्वा। इष्ट्वाऽग्नीषोमौ। अग्नीषोमौ यजति। अग्नीषोमावित्यग्नी—सोमौ। यजति चक्षुषी। चक्षुषी वै। चक्षुषी इति चक्षुषी। वा एते। एते यज्ञस्य। एते इत्येते। यज्ञस्य यत्। यदग्नीषोमौ। अग्नीषोमौ ताभ्याम्। अग्नीषोमावित्यग्नी—सोमौ। ताभ्या-मेव। एवानु। अनु पश्यति। पश्यत्यग्नीषोमौ। ॥ [३५] ॥ अग्नीषोमाविष्ट्वा। अग्नीषोमावि-त्यग्नी—सोमौ। इष्ट्वा सवितारम्। सवितारँय्यजति। यजति सवितृप्रसूतः। सवितृप्रसूत एव। सवितृप्रसूत इति सवितृ—प्रसूतः। एवानु। अनु पश्यति। पश्यति सवितारम्। सवितारमिष्ट्वा। इष्ट्वाऽदितिम्। अदितिँय्यजति। यजतीयम्। इयँव्वै। वा अदितिः। अदितिरस्याम्। अस्या-मेव। एव प्रतिष्ठाय। प्रतिष्ठायानु। प्रतिष्ठायेति प्रति—स्थाय। अनु पश्यति। पश्यत्यदितिम्। अदितिमिष्ट्वा। इष्ट्वा मारुतीम्। मारुतीमृचम्। ऋचमनु। अन्वाह। आह मरुतः। मरुतो वै। वै

देवानाम्। देवानाव्विंशः। विशो देवविशम्। देवविशम् खलु। देवविशमिति देव—विशम्। खलु वै। वै कल्पमानम्। कल्पमानम् मनुष्यविशम्। मनुष्यविशमनु। मनुष्यविशमिति मनुष्य—विशम्। अनु कल्पते। कल्पते यत्। यन् मारुतीम्। मारुतीमृचम्। ऋचमन्वाह। अन्वाह विशाम्। अन्वाहेत्यनु—आह। विशाम् क्लृप्त्यै। क्लृप्त्यै ब्रह्मवादिनः। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। ब्रह्म-वादिन इति ब्रह्म—वादिनः। वदन्ति प्रयाजवत्। प्रयाजवदननूयाजम्। प्रयाजवदिति प्रयाज—वत्। अननूयाजम् प्रायणीयम्। अननूयाजमित्यननु—याजम्। प्रायणीयम् कार्यम्। प्रायणी-यमिति प्र—अयनीयम्। कार्यमनूयाजवत्। अनूयाजवदप्रयाजम्। अनूयाजवदित्यनूयाज—वत्। ॥ [३६] ॥ अप्रयाजमुदयनीयम्। अप्रयाजमित्यप्र—याजम्। उदयनीयमिति। उदय-नीयमित्युत्—अयनीयम्। इतीमे। इमे वै। वै प्रयाजाः। प्रयाजा अमी। प्रयाजा इति प्र—याजाः। अमी अनूयाजाः। अमी इत्यमी। अनूयाजाः सा। अनूयाजा इत्यनु—याजाः। सैव। एव सा। सा यज्ञस्य। यज्ञस्य सन्ततिः। सन्ततिस्तत्। सन्ततिरिति सम्—ततिः। तत् तथा। तथा न। न कार्यम्। कार्यमात्मा। आत्मा वै। वै प्रयाजाः। प्रयाजाः प्रजा। प्रयाजा इति प्र—याजाः। प्रजाऽनूयाजाः। प्रजेति प्र—जा। अनूयाजा यत्। अनूयाजा इत्यनु—याजाः। यत् प्रयाजान्। प्रयाजानन्तरियात्। प्रयाजानिति प्र—याजान्। अन्तरियादात्मानम्। अन्त-रियादित्यन्तः—इयात्। आत्मानमन्तः। अन्तरियात्। इयाद् यत्। यदनूयाजान्। अनूयाजा-नन्तरियात्। अनूयाजानित्यनु—याजान्। अन्तरियात् प्रजाम्। अन्तरियादित्यन्तः—इयात्। प्रजामन्तः। प्रजामिति प्र—जाम्। अन्तरियात्। इयाद् यतः। यतः खलु। खलु वै। वै यज्ञस्य। यज्ञस्य विततस्य। विततस्य न। विततस्येति वि—ततस्य। न क्रियते। क्रियते तत्। तदनु। अनु यज्ञः। यज्ञः परा। परा भवति। भवति यज्ञम्। यज्ञम् पराभवन्तम्। पराभवन्तय्यँजमानः। परा-भवन्तमिति परा—भवन्तम्। यजमानोऽनु। अनु परा। ॥ [३७] ॥ परा भवति। भवति प्रया-जवत्। प्रयाजवदेव। प्रयाजवदिति प्रयाज—वत्। एवानूयाजवत्। अनूयाजवत् प्रायणीयम्। अनूयाजवदित्यनूयाज—वत्। प्रायणीयम् कार्यम्। प्रायणीयमिति प्र—अयनीयम्। कार्यम् प्रयाजवत्। प्रयाजवदनूयाजवत्। प्रयाजवदिति प्रयाज—वत्। अनूयाजवदुदयनीयम्। अनूया-जवदित्यनूयाज—वत्। उदयनीयम् न। उदयनीयमित्युत्—अयनीयम्। नात्मानम्। आत्मा-

नमन्तरेति। अन्तरेति न। अन्तरेतीत्यन्तः—एति। न प्रजाम्। प्रजाम् न। प्रजामिति प्र—जाम्। न यज्ञः। यज्ञः पराभवति। पराभवति न। पराभवतीति परा—भवति। न यजमानः। यजमानः प्रायणीयस्य। प्रायणीयस्य निष्कासे। प्रायणीयस्येति प्र—अयनीयस्य। निष्कास उदयनीयम्। उदयनीयमभि। उदयनीयमित्युत्—अयनीयम्। अभि निः। निर् वपति। वपति सा। सैव। एव सा। सा यज्ञस्य। यज्ञस्य सन्ततिः। सन्ततिर् याः। सन्ततिरिति सम्—ततिः। याः प्रायणीयस्य। प्रायणीयस्य याज्याः। प्रायणीयस्येति प्र—अयनीयस्य। याज्या यत्। यत् ताः। ता उदयनीयस्य। उदयनीयस्य याज्याः। उदयनीयस्येत्युत्—अयनीयस्य। याज्याः कुर्यात्। कुर्यात् पराङ्। पराङमुम्। अमुँल्लोकम्। लोकमा। आ रोहेत्। रोहेत् प्रमायुकः। प्रमायुकः स्यात्। प्रमायुक इति प्र—मायुकः। स्याद् याः। याः प्रायणीयस्य। प्रायणीयस्य पुरोनुवाक्याः। प्रायणीयस्येति प्र—अयनीयस्य। पुरोनुवाक्यास्ताः। पुरोनुवाक्या इति पुरः—अनुवाक्याः। ता उदयनीयस्य। उदयनीयस्य याज्याः। उदयनीयस्येत्युत्—अयनीयस्य। याज्याः करोति। करोत्यस्मिन्न्। अस्मिन्नेव। एव लोके। लोके प्रति। प्रति तिष्ठति। तिष्ठतीति तिष्ठति॥ ॥ [३८] ॥

(प्रज्ञात्यै पश्यत्य नूयाजव द्यजमानोऽनु पुरोनुवाक्यास्ता अष्टौ च) ॥ ५ ॥

कद्रूश्च। च वै। वै सुपर्णी। सुपर्णी च। सुपर्णीति सु—पर्णी। चात्मरूपयोः। आत्मरूपयो,रस्पर्द्धेताम्। आत्मरूपयोरित्यात्म—रूपयोः। अस्पर्द्धेता॑ꣳ सा। सा कद्रूः। कद्रूः सुपर्णीम्। सुपर्णीमजयत्। सुपर्णीमिति सु—पर्णीम्। अजयथ् सा। साऽब्रवीत्। अब्रवीत् तृतीयस्याम्। तृतीयस्यामितः। इतो दिवि। दिवि सोमः। सोमस्तम्। तमा। आ हर। हर तेन। तेनाऽऽत्मानम्। आत्मानम् निः। निष्क्रीणीष्व। क्रीणीष्वेति। इतीयम्। इयँवै। वै कद्रूः। कद्रूरसौ। असौ सुपर्णी। सुपर्णी छन्दा॑ꣳसि। सुपर्णीति सु—पर्णी। छन्दा॑ꣳसि सौपर्णेयाः। सौपर्णेयाः सा। साऽब्रवीत्। अब्रवीदस्मै। अस्मै वै। वै पितरौ। पितरौ पुत्रान्। पुत्रान् बिभृतः। बिभृतस्तृतीयस्याम्। तृतीयस्यामितः। इतो दिवि। दिवि सोमः। सोमस्तम्। तमा। आ हर। हर तेन। तेनाऽऽत्मानम्। आत्मानम् निः। निष्क्रीणीष्व। क्रीणीष्वेति। ॥ [३९] ॥ इति मा। मा कद्रूः। कद्रूरवोचत्। अवोचदिति। इति जगती। जगत्युत्। उदपतत्। अपतच् चतुर्दशाक्षरा।

चतुर्दशाख्षारा सती। चतुर्दशाख्षरेति चतुर्दश—अख्षरा। सती सा। साऽप्राप्य। अप्राप्य नि। अप्राप्येत्यप्र—आप्य। न्यवर्तत। अवर्तत तस्यै। तस्यै द्वे। द्वे अख्षरे। द्वे इति द्वे। अख्षरे अमीयेताम्। अख्षरे इत्यख्षरे। अमीयेताꣳ सा। सा पशुभिः। पशुभिश्च। पशुभिरिति पशु—भिः। च दीख्षया। दीख्षया च। चा। आऽगच्छत्। अगच्छत् तस्मात्। तस्माज् जगती। जगती छन्दसाम्। छन्दसाम् पशव्यतमा। पशव्यतमा तस्मात्। पशव्यतमेति पशव्य—तमा। तस्मात् पशुमन्तम्। पशुमन्तम् दीख्षा। पशुमन्तमिति पशु—मन्तम्। दीख्षोप। उप नमति। नमति त्रिष्टुक्। त्रिष्टुगुत्। उदपतत्। अपतत् त्रयोदशाख्षरा। त्रयोदशाख्षरा सती। त्रयोदशा-ख्षरेति त्रयोदश—अख्षरा। सती सा। साऽप्राप्य। अप्राप्य नि। अप्राप्येत्यप्र—आप्य। न्यव-र्तत। अवर्तत तस्यै। तस्यै द्वे। द्वे अख्षरे। द्वे इति द्वे। अख्षरे अमीयेताम्। अख्षरे इत्यख्षरे। अमीयेताꣳ सा। सा दख्षिणाभिः। दख्षिणाभिश्च। च तपसा। ॥ [४०] ॥ तपसा च। चा। आऽगच्छत्। अगच्छत् तस्मात्। तस्मात् त्रिष्टुभः। त्रिष्टुभो लोके। लोके माद्ध्यन्दिने। माद्ध्य-न्दिने सवने। सवने दख्षिणाः। दख्षिणा नीयन्ते। नीयन्त एतत्। एतत् खलु। खलु वाव। वाव तपः। तप इति। इत्याहुः। आहुर् यः। यः स्वम्। स्वम् ददाति। ददातीति। इति गायत्री। गायत्र्युत्। उदपतत्। अपतच् चतुरख्षरा। चतुरख्षरा सती। चतुरख्षरेति चतुः—अख्षरा। सत्यजया। अजया ज्योतिषा। ज्योतिषा तम्। तमस्यै। अस्या अजा। अजाऽभि। अभ्य-रुन्ध। अरुन्ध तत्। तदजायाः। अजाया अजत्वम्। अजत्वꣳ सा। अजत्वमित्यज—त्वम्। सा सोमम्। सोमम् च। चा। आऽहरत्। अहरच् चत्वारि। चत्वारि च। चाख्षराणि। अख्षराणि सा। साऽष्टाख्षरा। अष्टाख्षरा सम्। अष्टाख्षरेत्यष्टा—अख्षरा। समपद्यत। अपद्यत ब्रह्मवा-दिनः। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। ब्रह्मवादिन इति ब्रह्म—वादिनः। वदन्ति कस्मात्। ॥ [४१] ॥ कस्माथ् सत्यात्। सत्याद् गायत्री। गायत्री कनिष्ठा। कनिष्ठा छन्दसाम्। छन्दसाꣳ सती। सती यज्ञमुखम्। यज्ञमुखम् परि। यज्ञमुखमिति यज्ञ—मुखम्। परीयाय। इयायेति। इति यत्। यदेव। एवादः। अदः सोमम्। सोममा। आऽहरत्। अहरत् तस्मात्। तस्माद् यज्ञमुखम्। यज्ञमुखम् परि। यज्ञमुखमिति यज्ञ—मुखम्। पर्यैत्। ऐत् तस्मात्। तस्मात् तेजस्विनीतमा। तेजस्विनीतमा पद्भ्याम्। तेजस्विनीतमेति तेजस्विनी—तमा। पद्भ्याम् द्वे। पद्भ्यामिति पत्—

भ्याम्। द्वे सवने। द्वे इति द्वे। सवने समगृह्णात्। सवने इति सवने। समगृह्णान् मुखेन। सम-गृह्णादिति सम्—अगृह्णात्। मुखेनैकम्। एकय्यँत्। यन् मुखेन। मुखेन समगृह्णात्। समगृह्णात् तत्। समगृह्णादिति सम्—अगृह्णात्। तदधयत्। अधयत् तस्मात्। तस्माद् द्वे। द्वे सवने। द्वे इति द्वे। सवने शुक्रवती। सवने इति सवने। शुक्रवती प्रातस्सवनम्। शुक्रवती इति शुक्र—वती। प्रातस्सवनम् च। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। च माद्ध्यन्दिनम्। माद्ध्यन्दिनम् च। च तस्मात्। तस्मात् तृतीयसवने। तृतीयसवन ऋजीषम्। तृतीयसवन इति तृतीय—सवने। ऋजीषमभि। अभि षुण्वन्ति। सुन्वन्ति धीतम्। धीतमिव। इव हि। हि मन्यन्ते। मन्यन्त आशिरम्। ॥ [४२] ॥ आशिरमव। अव नयति। नयति सशुक्रत्वाय। सशुक्र-त्वायाथो। सशुक्रत्वायेति सशुक्र—त्वाय। अथो सम्। अथो इत्यथो। सम्भरति। भरत्येव। एवैनत्। एनत् तम्। तꣳ सोमम्। सोममाह्रियमाणम्। आह्रियमाणम् गन्धर्वः। आह्रियमाण-मित्या—ह्रियमाणम्। गन्धर्वो विश्वावसुः। विश्वावसुः परि। विश्वावसुरिति विश्व—वसुः। पर्य-मुष्णात्। अमुष्णाथ् सः। स तिस्रः। तिस्रो रात्रीः। रात्रीः परिमुषितः। परिमुषितोऽवसत्। परिमुषित इति परि—मुषितः। अवसत् तस्मात्। तस्मात् तिस्रः। तिस्रो रात्रीः। रात्रीः क्रीतः। क्रीतः सोमः। सोमो वसति। वसति ते। ते देवाः। देवा अब्रुवन्न्। अब्रुवन्थ् स्त्रीकामाः। स्त्रीकामा वै। स्त्रीकामा इति स्त्री—कामाः। वै गन्धर्वाः। गन्धर्वाः स्त्रिया। स्त्रिया निः। निष्क्रीणाम। क्रीणामेति। इति ते। ते वाचम्। वाचꣳ स्त्रियम्। स्त्रियमेकहायनीम्। एकहायनीम् कृत्वा। एक-हायनीमित्येक—हायनीम्। कृत्वा तया। तया निः। निरक्रीणन्न्। अक्रीणन्थ् सा। सा रोहित्। रोहिद् रूपम्। रूपम् कृत्वा। कृत्वा गन्धर्वेभ्यः। गन्धर्वेभ्योऽपक्रम्य। ॥ [४३] ॥ अपक्र-म्यातिष्ठत्। अपक्रम्येत्यप—क्रम्य। अतिष्ठत् तत्। तद् रोहितः। रोहितो जन्म। जन्म ते। ते देवाः। देवा अब्रुवन्न्। अब्रुवन्नप। अप युष्मत्। युष्मदक्रमीत्। अक्रमीन् न। नास्मान्। अस्मानुपावर्तते। उपावर्तते वि। उपावर्तत इत्युप—आवर्तते। वि ह्वयामहै। ह्वयामहा इति। इति ब्रह्म। ब्रह्म गन्धर्वाः। गन्धर्वा अवदन्न्। अवदन्नगायन्न्। अगायन् देवाः। देवाः सा। सा देवान्। देवान् गायतः। गायत उपावर्तत। उपावर्तत तस्मात्। उपावर्ततेत्युप—आवर्तत। तस्माद् गायन्तम्। गायन्तꣳ स्त्रियः। स्त्रियः कामयन्ते। कामयन्ते कामुकाः। कामुका एनम्।

ए॒न॒ꣳ॒ स्त्रियः॑। स्त्रियो॑ भवन्ति। भ॒व॒न्ति॒ यः। य ए॒वम्। ए॒वव्ँवेद॑। वेदाथो᳚। अथो॒ यः। अथो॒ इत्यथो᳚। य ए॒वम्। ए॒वव्ँवि॒द्वान्। वि॒द्वानपि॑। अपि॒ जन्ये॑षु। जन्ये॑षु॒ भव॑ति। भव॑ति॒ तेभ्यः॑। तेभ्य॑ ए॒व। ए॒व दद॑ति। द॒द॒त्यु॒त। उ॒त यत्। यद् ब॒हुत॑याः। ब॒हुत॑या॒ भव॑न्ति। ब॒हुत॑या॒ इति॑ ब॒हु—त॒याः। ॥ [४४] ॥ भ॒व॒न्त्येक॑हायन्या। एक॑हायन्या क्रीणाति। एक॑हाय॒न्येत्येक॑—हा॒य॒न्या॒। क्री॒णा॒ति॒ वा॒चा। वा॒चैव। ए॒वैन᳚म्। ए॒न॒ꣳ॒ सर्व॑या। सर्व॑या क्रीणाति। क्री॒णा॒ति॒ तस्मा᳚त्। तस्मा॒दे-क॑हायनाः। एक॑हायना मनु॒ष्या᳚ः। एक॑हायना॒ इत्येक॑—हा॒य॒ना॒ः। म॒नु॒ष्या॑ वाच᳚म्। वाच॑व्ँवदन्ति। व॒द॒न्त्यकू॑टया। अकू॒टयाऽक॑र्णया। अक॑र्ण॒याऽका॑णया। अका॑ण॒याऽश्लो॑णया। अश्लो॑ण॒याऽस॑-प्तशफया। अस॑प्तशफया क्रीणाति। अस॑प्तशफ॒येत्यस॑प्त—श॒फ॒या॒। क्री॒णा॒ति॒ सर्व॑या। सर्व॑यै॒व। ए॒वैन᳚म्। ए॒नम् क्री॒णा॒ति॒। क्री॒णा॒ति॒ यत्। यच् छ्वे॒तया᳚। श्वे॒तया᳚ क्रीणी॒यात्। क्री॒णी॒याद् दु॒श्चर्मा᳚। दु॒श्चर्मा॒ यज॑मानः। दु॒श्चर्मेति॑ दुः—चर्मा᳚। यज॑मानः स्यात्। स्या॒द् यत्। यत् कृ॒ष्णया᳚। कृ॒ष्ण-या॑ऽनु॒स्तर॑णी। अ॒नु॒स्तर॑णी स्यात्। अ॒नु॒स्तर॒णीत्य॑नु—स्तर॑णी। स्या॒त् प्र॒मायु॑कः। प्र॒मायु॑को॒ यज॑मानः। प्र॒मायु॑क॒ इति॑ प्र—मायु॑कः। यज॑मानः स्यात्। स्या॒द् यत्। यद् वि॑रू॒पया᳚। द्वि॒रू॒पया॒ वार्त्र॑घ्नी। द्वि॒रू॒पयेति॑ द्वि—रू॒पया᳚। वार्त्र॑घ्नी स्यात्। वा॒र्त्र॒घ्नीति॒ वार्त्र॑—घ्नी॒। स्या॒थ् सः। स वा᳚। वा॒ऽन्यम्। अ॒न्यम् जि॑नी॒यात्। जि॒नी॒यात् तम्। तव्ँवा᳚। वा॒ऽन्यः। अ॒न्यो जि॑नीयात्। जि॒नी॒या-द॒रु॒णया᳚। अ॒रु॒णया॑ पि॒ङ्गा॒क्ष्या। पि॒ङ्गा॒क्ष्या क्री॑णाति। पि॒ङ्गा॒क्ष्येति॑ पि॒ङ्ग—अ॒क्ष्या। क्री॒णा॒त्ये॒तत्। ए॒तद् वै। वै सोम॑स्य। सोम॑स्य रू॒पम्। रू॒पꣳ॒ स्वया᳚। स्वयै॒व। ए॒वैन᳚म्। ए॒नम् दे॒वत॑या। दे॒वत॑या क्रीणाति। क्री॒णा॒तीति॑ क्रीणाति॥ ॥ [४५] ॥

(निष्क्रीणीष्व॒ दक्षि॑णाभिश्च वदन्ति॒ मन्य॑न्ते गन्ध॒र्वेभ्यो᳚ ब॒हुत॑याः पिङ्गा॒क्ष्या दश॑ च) ॥ ६ ॥

तद्धिर॑ण्यम्। हिर॑ण्यमभवत्। अ॒भ॒व॒त् तस्मा᳚त्। तस्मा॑द॒द्भ्यः। अ॒द्भ्यो हिर॑ण्यम्। अ॒द्भ्य इत्य॑त्—भ्यः। हिर॑ण्यम् पुनन्ति। पु॒न॒न्ति॒ ब्र॒ह्म॒वा॒दिनः॑। ब्र॒ह्म॒वा॒दिनो॑ वदन्ति। ब्र॒ह्म॒वा॒दि॒न इति॑ ब्रह्म—वा॒दिनः॑। व॒द॒न्ति॒ कस्मा᳚त्। कस्मा᳚थ् स॒त्यात्। स॒त्याद॑न॒स्थिके॑न। अ॒न॒स्थिके॑न प्र॒जाः। प्र॒जाः प्र॒वीय॑न्ते। प्र॒जा इति॑ प्र—जाः। प्र॒वीय॑न्तेऽस्थ॒न्वती᳚ः। प्र॒वीय॑न्त॒ इति॑ प्र—वीय॑न्ते। अ॒स्थ॒न्वती᳚र् जायन्ते। अ॒स्थ॒न्वती॒रित्य॑स्थन्न्—वती᳚ः। जा॒य॒न्त॒ इति॑। इति॒ यत्। यद्धिर॑ण्यम्।

हिरण्यम् घृते। घृतेऽवधार्य। अवधार्य जुहोति। अवधायेत्यव—धार्य। जुहोति तस्मात्। तस्मादनस्थिकेन। अनस्थिकेन प्रजाः। प्रजाः प्र। प्रजा इति प्र—जाः। प्र वीयन्ते। वीयन्तेऽस्थन्वतीः। अस्थन्वतीर् जायन्ते। अस्थन्वतीरित्यस्थन्न्—वतीः। जायन्त एतत्। एतद् वै। वा अग्नेः। अग्नेः प्रियम्। प्रियम् धाम। धाम यत्। यद् घृतम्। घृतम् तेजः। तेजो हिरण्यम्। हिरण्यमियम्। इयम् ते। ते शुक्र। शुक्र तनूः। तनूरिदम्। इदँव्वर्चः। वर्च इति। इत्याह। आह सतेजसम्। सतेजसमेव। सतेजसमिति स—तेजसम्। एवैनम्। एनꣳ सतनुम्। सतनुम् करोति। सतनुमिति स—तनुम्। ॥ [४६] ॥ करोत्यथो। अथो सम्। अथो इत्यथो। सम्भरति। भरत्येव। एवैनम्। एनँय्यत्। यदबद्धम्। अबद्धमवदद्ध्यात्। अवदद्ध्याद् गर्भाः। अवदद्ध्यादित्यव—दद्ध्यात्। गर्भाः प्रजानाम्। प्रजानाम् परापातुकाः। प्रजानामिति प्र—जानाम्। परापातुकाः स्युः। परापातुका इति परा—पातुकाः। स्युर् बद्धम्। बद्धमव। अव दधाति। दधाति गर्भाणाम्। गर्भाणाम् धृत्यै। धृत्यै निष्टर्क्यम्। निष्टर्क्यम् बध्नाति। बध्नाति प्रजानाम्। प्रजानाम् प्रजननाय। प्रजानामिति प्र—जानाम्। प्रजननाय वाक्। प्रजननायेति प्र—जननाय। वाग् वै। वा एषा। एषा यत्। यथ् सोमक्रयणी। सोमक्रयणी जूः। सोमक्रयणीति सोम—क्रयणी। जूरसि। असीति। इत्याह। आह यत्। यद्धि। हि मनसा। मनसा जवते। जवते तत्। तद् वाचा। वाचा वदति। वदति धृता। धृता मनसा। मनसेति। इत्याह। आह मनसा। मनसा हि। हि वाक्। वाग् धृता। धृता जुष्टा। जुष्टा विष्णवे। विष्णव इति। इत्याह। आह यज्ञः। ॥ [४७] ॥ यज्ञो वै। वै विष्णुः। विष्णुर् यज्ञाय। यज्ञायैव। एवैनाम्। एनाम् जुष्टाम्। जुष्टाम् करोति। करोति तस्याः। तस्यास्ते। ते सत्यसवसः। सत्यसवसः प्रसवे। सत्यसवस इति सत्य—सवसः। प्रसव इति। प्रसव इति प्र—सवे। इत्याह। आह सवितृप्रसूताम्। सवितृप्रसूतामेव। सवितृप्रसूतामिति सवितृ—प्रसूताम्। एव वाचम्। वाचमव। अव रुन्धे। रुन्धे काण्डेकाण्डे। काण्डेकाण्डे वै। काण्डेकाण्ड इति काण्डे—काण्डे। वै क्रियमाणे। क्रियमाणे यज्ञम्। यज्ञꣳ रक्षाꣳसि। रक्षाꣳसि जिघाꣳसन्ति। जिघाꣳसन्त्येषः। एष खलु। खलु वै। वा अरक्षोहतः। अरक्षोहतः पन्थाः। अरक्षोहत इत्यरक्षः—हतः। पन्था यः। योऽग्नेः। अग्नेश्च। च सूर्यस्य। सूर्यस्य च। च सूर्यस्य। सूर्यस्य चक्षुः। चक्षुरा। आऽरुहम्। अरु-

हमग्नेः। अग्नेरख्ष्णः। अख्ष्णः कनीनिकाम्। कनीनिकामिति। इत्याह। आह यः। य एव। एवारख्षोहतः। अरख्षोहतः पन्थाः। अरख्षोहत इत्यरख्षः—हतः। पन्थास्तम्। तꣳ समारोहति। समारोहति वाक्। समारोहतीति सम्—आरोहति। ॥ [४८] ॥ वाग् वै। वा एषा। एषा यत्। यथ् सोमक्रयणी। सोमक्रयणी चित्। सोमक्रयणीति सोम—क्रयणी। चिदसि। असि मना। मनाऽसि। असीति। इत्याह। आह शास्ति। शास्त्येव। एवैनाम्। एनामेतत्। एतत् तस्मात्। तस्माच्छिष्टाः। शिष्टाः प्रजाः। प्रजा जायन्ते। प्रजा इति प्र—जाः। जायन्ते चित्। चिदसि। असीति। इत्याह। आह यत्। यद्धि। हि मनसा। मनसा चेतयते। चेतयते तत्। तद् वाचा। वाचा वदति। वदति मना। मनाऽसि। असीति। इत्याह। आह यत्। यद्धि। हि मनसा। मनसाऽभिगच्छति। अभिगच्छति तत्। अभिगच्छतीत्यभि—गच्छति। तत् करोति। करोति धीः। धीरसि। असीति। इत्याह। आह यत्। यद्धि। हि मनसा। मनसा ध्यायति। ध्यायति तत्। तद् वाचा। वाचा वदति। ॥ [४९] ॥ वदति दख्षिणा। दख्षिणाऽसि। असीति। इत्याह। आह दख्षिणा। दख्षिणा हि। ह्येषा। एषा यज्ञिया। यज्ञियाऽसि। असीति। इत्याह। आह यज्ञियाम्। यज्ञियामेव। एवैनाम्। एनाम् करोति। करोति ख्षत्रिया। ख्षत्रियाऽसि। असीति। इत्याह। आह ख्षत्रिया। ख्षत्रिया हि। ह्येषा। एषाऽदितिः। अदितिरसि। अस्युभयतश्शीर्ष्णी। उभयतश्शीर्ष्णीति। उभयतश्शीर्ष्णीत्युभयतः—शीर्ष्णी। इत्याह। आह यत्। यदेव। एवादित्यः। आदित्यः प्रायणीयः। प्रायणीयो यज्ञानाम्। प्रायणीय इति प्र—अयनीयः। यज्ञानामादित्यः। आदित्य उदयनीयः। उदयनीयस्तस्मात्। उदयनीय इत्युत्—अयनीयः। तस्मादेवम्। एवमाह। आह यत्। यदबद्धा। अबद्धा स्यात्। स्यादयता। अयता स्यात्। स्याद् यत्। यत् पदिबद्धा। पदिबद्धाऽनुस्तरणी। पदिबद्धेति पदि—बद्धा। अनुस्तरणी स्यात्। अनुस्तरणीत्यनु—स्तरणी। स्यात् प्रमायुकः। प्रमायुको यजमानः। प्रमायुक इति प्र—मायुकः। यजमानः स्यात्। स्याद् यत्। ॥ [५०] ॥ यत् कर्णगृहीता। कर्णगृहीता वार्त्रघ्नी। कर्णगृहीतेति कर्ण—गृहीता। वार्त्रघ्नी स्यात्। वार्त्रघ्नीति वार्त्र—घ्नी। स्याथ् सः। स वा। वाऽन्यम्। अन्यम् जिनीयात्। जिनीयात् तम्। तव्वा। वाऽन्यः। अन्यो जिनीयात्। जिनीयान् मित्रः। मित्रस्त्वा। त्वा पदि। पदि बद्ध्नातु। बद्ध्नात्विति। इत्याह। आह मित्रः।

मित्रो वै। वै शिवः। शिवो देवानाम्। देवानाम् तेन। तेनैव। एवैनाम्। एनाम् पदि। पदि बद्ध्नाति। बद्ध्नाति पूषा। पूषाऽद्ध्वनः। अद्ध्वनः पातु। पात्विति। इत्याह। आहेयम्। इयव्वै। वै पूषा। पूषेमाम्। इमामेव। एवास्याः। अस्या अधिपाम्। अधिपामकः। अधिपामित्यधि—पाम्। अकः समष्ट्यै। समष्ट्या इन्द्राय। समष्ट्या इति सम्—अष्ट्यै। इन्द्रायाद्ध्यख्षाय। अद्ध्यख्षायेति। अद्ध्यख्षायेत्यधि—अख्षाय। इत्याह। आहेन्द्रम्। इन्द्रमेव। एवास्याः। अस्या अद्ध्यख्षम्। अद्ध्यख्षम् करोति। अद्ध्यख्षमित्यधि—अख्षम्। करोत्यनु। ॥ [५१] ॥ अनु त्वा। त्वा माता। माता मन्यताम्। मन्यतामनु। अनु पिता। पितेति। इत्याह। आहानुमतया। अनुमतयैव। अनुमतयेत्यनु—मतया। एवैनया। एनया क्रीणाति। क्रीणाति सा। सा देवि। देवि देवम्। देवमच्छ। अच्छेहि। इहीति। इत्याह। आह देवी। देवी हि। ह्येषा। एषा देवः। देवः सोमः। सोम इन्द्राय। इन्द्राय सोमम्। सोममिति। इत्याह। आहेन्द्राय। इन्द्राय हि। हि सोमः। सोम आह्रियते। आह्रियते यत्। आह्रियत इत्या—ह्रियते। यदेतत्। एतद् यजुः। यजुर् न। न ब्रूयात्। ब्रूयात् पराची। पराच्येव। एव सोमक्रयणी। सोमक्रयणीयात्। सोमक्रयणीति सोम—क्रयणी। इयाद् रुद्रः। रुद्रस्त्वा। त्वा। आ वर्तयतु। वर्तयत्विति। इत्याह। आह रुद्रः। रुद्रो वै। वै क्रूरः। क्रूरो देवानाम्। ॥ [५२] ॥ देवानाम् तम्। तमेव। एवास्यै। अस्यै परस्तात्। परस्ताद् दधाति। दधात्यावृत्त्यै। आवृत्त्यै क्रूरम्। आवृत्त्या इत्या—वृत्त्यै। क्रूरमिव। इव वै। वा एतत्। एतत् करोति। करोति यत्। यद् रुद्रस्य। रुद्रस्य कीर्तयति। कीर्तयति मित्रस्य। मित्रस्य पथा। पथेति। इत्याह। आह शान्त्यै। शान्त्यै वाचा। वाचा वै। वा एषः। एष वि। वि क्रीणीते। क्रीणीते यः। यः सोमक्रयण्या। सोमक्रयण्या स्वस्ति। सोमक्रयण्येति सोम—क्रयण्या। स्वस्ति सोमसखा। सोमसखा पुनः। सोमसखेति सोम—सखा। पुनरा। एहि। इहि सह। सह रय्या। रय्येति। इत्याह। आह वाचा। वाचैव। एव विक्रीय। विक्रीय पुनः। विक्रीयेति वि—क्रीय। पुनरात्मन्न्। आत्मन् वाचम्। वाचम् धत्ते। धत्तेऽनुपदासुका। अनुपदासुकाऽस्य। अनुपदासुकेत्यनुप—दासुका। अस्य वाक्। वाग् भवति। भवति यः। य एवम्। एवव्वेद। वेदेति वेद॥ ॥ [५३] ॥

(सतनुम् विष्णव इत्याह समारोहति ध्यायति तद् वाचा यजमानः स्यात् करोति क्रूरो वेद) ॥ ७ ॥

षट् पदानि। पदान्यनु। अनु नि। नि क्रामति। क्रामति षडहम्। षडहँव्वाक्। षडहमिति षट्—अहम्। वाङ् न। नाति। अति वदति। वदत्युत। उत संव्वँथ्सरस्य। संव्वँथ्सरस्यायने। संव्वँथ्सरस्येति सम्—वथ्सरस्य। अयने यावती। यावत्येव। एव वाक्। वाक् ताम्। तामव। अव रुन्धे। रुन्धे सप्तमे। सप्तमे पदे। पदे जुहोति। जुहोति सप्तपदा। सप्तपदा शक्करी। सप्त-पदेति सप्त—पदा। शक्करी पशवः। पशवः शक्करी। शक्करी पशून्। पशूनेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे सप्त। सप्त ग्राम्याः। ग्राम्याः पशवः। पशवः सप्त। सप्तारण्याः। आरण्याः सप्त। सप्त छन्दाꣳसि। छन्दाꣳस्युभयस्य। उभयस्यावरुद्ध्यै। अवरुद्ध्यै वस्वी। अवरुद्ध्या इत्यव—रुद्ध्यै। वस्व्यसि। असि रुद्रा। रुद्राऽसि। असीति। इत्याह। आह रूपम्। रूपमेव। एवास्याः। अस्या एतत्। एतन् महिमानम्। महिमानँव्व्याचष्टे। ॥ [५४] ॥ व्याचष्टे बृहस्पतिः। व्याचष्ट इति वि—आचष्टे। बृहस्पतिस्त्वा। त्वा सुम्ने। सुम्ने रण्वतु। रण्वत्विति। इत्याह। आह ब्रह्म। ब्रह्म वै। वै देवानाम्। देवानाम् बृहस्पतिः। बृहस्पतिर् ब्रह्मणा। ब्रह्मणैव। एवास्मै। अस्मै पशून्। पशूनव। अव रुन्धे। रुन्धे रुद्रः। रुद्रो वसुभिः। वसुभिरा। वसुभिरिति वसु—भिः। आ चिकेतु। चिकेत्विति। इत्याह। आहावृत्त्यै। आवृत्त्यै पृथिव्याः। आवृत्त्या इत्या—वृत्त्यै। पृथिव्यास्त्वा। त्वा मूर्द्धन्न्। मूर्द्धन्ना। आ जिघर्मि। जिघर्मि देवयजने। देवयजन इति। देव-यजन इति देव—यजने। इत्याह। आह पृथिव्याः। पृथिव्या हि। ह्येषः। एष मूर्द्धा। मूर्द्धा यत्। यद् देवयजनम्। देवयजनमिडायाः। देवयजनमिति देव—यजनम्। इडायाः पदे। पद इति। इत्याह। आहेडायै। इडायै हि। ह्येतत्। एतत् पदम्। पदय्यँत्। यथ् सोमक्रयण्यै। सोमक्रयण्यै घृतवति। सोमक्रयण्या इति सोम—क्रयण्यै। घृतवति स्वाहा। घृतवतीति घृत—वति। स्वाहेति। ॥ [५५] ॥ इत्याह। आह यत्। यदेव। एवास्मै। अस्मै पदात्। पदाद् घृतम्। घृतमपीड्यत। अपीड्यत तस्मात्। तस्मादेवम्। एवमाह। आह यत्। यदद्ध्वर्युः। अदध्वर्यु,रनग्नौ। अनग्नावाहुतिम्। आहुतिम् जुहुयात्। आहुतिमित्या—हुतिम्। जुहुयादन्धः। अन्धोऽदध्वर्युः। अदध्वर्युः स्यात्। स्याद् रख्षाꣳसि। रख्षाꣳसि यज्ञम्। यज्ञꣳ हन्युः। हन्युर् हिरण्यम्। हिरण्यमुपास्य। उपास्य जुहोति। उपास्येत्युप—अस्य। जुहोत्यग्निवति। अग्निव-

त्येव। अग्निवतीत्यग्नि—वति। एव जुहोति। जुहोति न। नान्धः। अन्धोऽद्ध्वर्युः। अद्ध्वर्युर् भवति। भवति न। न यज्ञम्। यज्ञꣳ रक्षाꣳसि। रक्षाꣳसि घ्नन्ति। घ्नन्ति काण्डेकाण्डे। काण्डेकाण्डे वै। काण्डेकाण्ड इति काण्डे—काण्डे। वै क्रियमाणे। क्रियमाणे यज्ञम्। यज्ञꣳ रक्षाꣳसि। रक्षाꣳसि जिघाꣳसन्ति। जिघाꣳसन्ति परिलिखितम्। परिलिखितꣳ रक्षः। परिलिखितमिति परि—लिखितम्। रक्षः परिलिखिताः। परिलिखिता अरातयः। परिलि-खिता इति परि—लिखिताः। अरातय इति। इत्याह। आह रक्षसाम्। रक्षसामपहत्यै। अपहत्या इदम्। अपहत्या इत्यप—हत्यै। ॥ [५६] ॥ इदमहम्। अहꣳ रक्षसः। रक्षसो ग्रीवाः। ग्रीवा अपि। अपि कृन्तामि। कृन्तामि यः। योऽस्मान्। अस्मान् द्वेष्टि। द्वेष्टि यम्। यम् च। च वयम्। वयम् द्विष्मः। द्विष्म इति। इत्याह। आह द्वौ। द्वौ वाव। वाव पुरुषौ। पुरुषौ यम्। यम् च। चैव। एव द्वेष्टि। द्वेष्टि यः। यश्च। चैनम्। एनम् द्वेष्टि। द्वेष्टि तयोः। तयो-रेव। एवानन्तरायम्। अनन्तरायम् ग्रीवाः। अनन्तरायमित्यनन्तः—आयम्। ग्रीवाः कृन्तति। कृन्तति पशवः। पशवो वै। वै सोमक्रयण्यै। सोमक्रयण्यै पदम्। सोमक्रयण्या इति सोम—क्रयण्यै। पदय्याँवत्त्मूतम्। यावत्त्मूतꣳ सम्। यावत्त्मूतमिति यावत्—त्मूतम्। सव्ँवपति। वपति पशून्। पशूनेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धेऽस्मे। अस्मे रायः। अस्मे इत्यस्मे। राय इति। इति सम्। सव्ँवपति। वपत्यात्मानम्। आत्मानमेव। एवाद्ध्वर्युः। अद्ध्वर्युः पशुभ्यः। ॥ [५७] ॥ पशुभ्यो न। पशुभ्य इति पशु—भ्यः। नान्तः। अन्तरेति। एति त्वे। त्वे रायः। त्वे इति त्वे। राय इति। इति यजमनाय। यजमानाय प्र। प्र यच्छति। यच्छति यजमाने। यजमान एव। एव रयिम्। रयिम् दधाति। दधाति तोते। तोते रायः। राय इति। इति पत्नियै। पत्निया अर्द्धः। अर्द्धो वै। वा एषः। एष आत्मनः। आत्मनो यत्। यत् पत्नी। पत्नी यथा। यथा गृहेषु। गृहेषु निधत्ते। निधत्ते तादृक्। निधत्त इति नि—धत्ते। तादृगेव। एव तत्। तत् त्वष्टीमती। त्वष्टी-मती ते। ते सपेय। सपेयेति। इत्याह। आह त्वष्टा। त्वष्टा वै। वै पशूनाम्। पशूनाम् मिथुनानाम्। मिथुनानाꣳ रूपकृत्। रूपकृद् रूपम्। रूपकृदिति रूप—कृत्। रूपमेव। एव पशुषु। पशुषु दधाति। दधात्यस्मै। अस्मै वै। वै लोकाय। लोकाय गार्हपत्यः। गार्हपत्य आ। गार्हपत्य इति गार्ह—पत्यः। आ धीयते। धीयतेऽमुष्मै। अमुष्मा आहवनीयः। आहवनीयो यत्। आह-

वनीय इत्या—हवनीयः। यद् गार्हपत्ये। गार्हपत्य उपवपेत्। गार्हपत्य इति गार्ह—पत्ये। उपवपेदस्मिन्न्। उपवपेदित्युप—वपेत्। अस्मिँल्लोके। लोके पशुमान्। पशुमान्थ् स्यात्। पशुमानिति पशु—मान्। स्याद् यत्। यदाहवनीये। आहवनीयेऽमुष्मिन्न्। आहवनीय इत्या—हवनीये। अमुष्मिँल्लोके। लोके पशुमान्। पशुमान्थ् स्यात्। पशुमानिति पशु—मान्। स्यादुभयोः। उभयोरुप। उप वपति। वपत्युभयोः। उभयोरेव। एवैनम्। एनँल्लोकयोः। लोकयोः पशुमन्तम्। पशुमन्तम् करोति। पशुमन्तमिति पशु—मन्तम्। करोतीति करोति॥ ॥ [५८] ॥

(महिमानङ्ग् स्वाहा ऽपहत्या अध्वर्यु र्धीयते चतुर्विꣳशतिश्च) ॥ ८ ॥

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। ब्रह्मवादिन इति ब्रह्म—वादिनः। वदन्ति विचित्यः। विचित्यः सोमा(३)ः। विचित्य इति वि—चित्यः। सोमा(३) न। न विचित्या(३)ः। विचित्या(३) इति। विचित्या(३) इति वि—चित्या (३)ः। इति सोमः। सोमो वै। वा ओषधीनाम्। ओषधीनाꣳ राजा। राजा तस्मिन्न्। तस्मिन्यत्। यदापन्नम्। आपन्नम् ग्रसितम्। आपन्नमित्या—पन्नम्। ग्रसितमेव। एवास्य। अस्य तत्। तद् यत्। यद् विचिनुयात्। विचिनुयाद् यथा। विचिनुयादिति वि—चिनुयात्। यथाऽऽस्यात्। आस्याद् ग्रसितम्। ग्रसितम् निष्खिदति। निष्खिदति तादृक्। निष्खिदतीति निः—खिदति। तादृगेव। एव तत्। तद् यत्। यन् न। न विचिनुयात्। विचिनुयाद् यथा। विचिनुयादिति वि—चिनुयात्। यथाऽक्षन्न्। अक्षन्नापन्नम्। आपन्नँव्विधावति। आपन्नमित्या—पन्नम्। विधावति तादृक्। विधावतीति वि—धावति। तादृगेव। एव तत्। तत् क्षोधुकः। क्षोधुकोऽध्वर्युः। अध्वर्युः स्यात्। स्यात् क्षोधुकः। क्षोधुको यजमानः। यजमानः सोमविक्रयिन्न्। सोमविक्रयिन्थ् सोमम्। सोमविक्रयिन्निति सोम—विक्रयिन्न्। सोमꣳ शोधय। शोधयेति। इत्येव। एव ब्रूयात्। ब्रूयाद् यदि। यदीतरम्। इतरँय्यदि। ॥ [५९] ॥ यदीतरम्। इतरमुभयेन। उभयेनैव। एव सोमविक्रयिणम्। सोमविक्रयिणमर्पयति। सोमविक्रयिणमिति सोम—विक्रयिणम्। अर्पयति तस्मात्। तस्माथ् सोमविक्रयी। सोमविक्रयी क्षोधुकः। सोमविक्रयीति सोम—विक्रयी। क्षोधुकोऽरुणः। अरुणो ह। ह स्म। स्माह। आहौपवेशिः। औपवेशिः सोमक्रयणे। औपवेशिरित्यौप—वेशिः। सोम-

क्रयंण एव। सोमक्रयंण इतिं सोम—क्रयंणे। एवाहम्। अहम् तृतीयसवनम्। तृतीयसवन-मवं। तृतीयसवनमितिं तृतीय—सवनम्। अवं रुन्धे। रुन्ध इतिं। इतिं पशूनाम्। पशूनाम् चर्मंन्न्। चर्मंन् मिमीते। मिमीते पशून्। पशूनेव। एवावं। अवं रुन्धे। रुन्धे पशवंः। पशवो हि। हि तृतीयंम्। तृतीयꣳ सवंनम्। सवंनय्यँम्। यम् कामयेत। कामयेतापशुः। अपशुः स्यात्। स्यादितिं। इत्यृंख्षतः। ऋख्षतस्तस्यं। तस्यं मिमीत। मिमीतर्ख्षम्। ऋख्षव्वैं। वा अपशव्यम्। अपशव्यमपशुः। अपशुरेव। एव भंवति। भवति यम्। यम् कामयेत। कामयेत पशुमान्। पशुमान्थ् स्यात्। पशुमानितिं पशु—मान्। स्यादितिं। ॥ [६०] ॥ इतिं लोमतः। लोमतस्तस्यं। तस्यं मिमीत। मिमीतैतत्। एतद् वै। वै पशूनाम्। पशूनाꣳ रूपम्। रूपꣳ रूपेणं। रूपेणैव। एवास्मैं। अस्मै पशून्। पशूनवं। अवं रुन्धे। रुन्धे पशुमान्। पशुमा-नेव। पशुमानितिं पशु—मान्। एव भंवति। भवत्यपाम्। अपामन्तें। अन्तें क्रीणाति। क्रीणाति सरंसम्। सरंसमेव। सरंसमिति स—रसम्। एवैनंम्। एनम् क्रीणाति। क्रीणात्यमात्यंः। अमा-त्योंऽसि। असीतिं। इत्याह। आहामा। अमैव। एवैनंम्। एनम् कुरुते। कुरुते शुक्रः। शुक्रस्तें। ते ग्रहंः। ग्रह इतिं। इत्याह। आह शुक्रः। शुक्रो हि। ह्यस्य। अस्य ग्रहंः। ग्रहोऽनंसा। अन-साऽच्छं। अच्छं याति। याति महिमानंम्। महिमानंमेव। एवास्यं। अस्याच्छं। अच्छं याति। यात्यनंसा। अनसाऽच्छं। ॥ [६१] ॥ अच्छं याति। याति तस्मात्। तस्मादनोवाह्यम्। अनो-वाह्यꣳ समे। अनोवाह्यमित्यनः—वाह्यम्। समे जीवंनम्। जीवंनय्यँत्र। यत्र खलुं। खलु वै। वा एतम्। एतꣳ शीर्ष्णा। शीर्ष्णा हरंन्ति। हरंन्ति तस्मात्। तस्माच्छीर्षहार्यम्। शीर्ष-हार्यम् गिरौ। शीर्षहार्यमितिं शीर्ष—हार्यम्। गिरौ जीवंनम्। जीवंनमभि। अभि त्यम्। त्यम् देवम्। देवꣳ संवितारंम्। सवितारमितिं। इत्यतिच्छन्दसा। अतिच्छन्दसर्चा। अति-च्छन्दसेत्यतिं—छन्दसा। ऋचा मिमीते। मिमीतेऽतिंच्छन्दाः। अतिंच्छन्दा वै। अतिंच्छन्दा इत्यतिं—छन्दाः। वै सर्वाणि। सर्वाणि छन्दाꣳसि। छन्दाꣳसि सर्वैंभिः। सर्वैंभिरेव। एवैनंम्। एनम् छन्दोंभिः। छन्दोंभिर् मिमीते। छन्दोंभिरिति छन्दंः—भिः। मिमीते वर्ष्मं। वर्ष्म वै। वा एषा। एषा छन्दंसाम्। छन्दंसाय्यँत्। यदतिंच्छन्दाः। अतिंच्छन्दा यत्। अतिंच्छन्दा इत्यतिं—छन्दाः। यदतिंच्छन्दसा। अतिंच्छन्दसर्चा। अतिंच्छन्दसेत्यतिं—छन्दसा। ऋचा मिमीते।

मिमीते वर्ष्म। वर्ष्मैव। एवैनम्। एनꣲ समानानाम्। समानानाम् करोति। करोत्येकयैकया। एकयैकयोथ्सर्गम्। एकयैकयेत्येकया—एकया। उथ्सर्गम् मिमीते। उथ्सर्गमित्युत्—सर्गम्। ॥ [६२] ॥ मिमीतेऽयातयाम्नियायातयाम्निया। अयातयाम्नियायातयाम्निययैव। अयातयाम्नि-यायातयाम्नियेत्ययातयाम्निया—अयातयाम्निया। एवैनम्। एनम् मिमीते। मिमीते तस्मात्। तस्मान् नानावीर्याः। नानावीर्या अङ्गुलयः। नानावीर्या इति नाना—वीर्याः। अङ्गुलयः सर्वासु। सर्वास्वङ्गुष्ठम्। अङ्गुष्ठमुप। उप नि। नि गृह्णाति। गृह्णाति तस्मात्। तस्माथ् समावद्वीर्यः। समावद्वीर्योऽन्याभिः। समावद्वीर्य इति समावत्—वीर्यः। अन्याभिरङ्गुलिभिः। अङ्गुलिभि,स्तस्मात्। अङ्गुलिभिरित्यङ्गुलि—भिः। तस्माथ् सर्वाः। सर्वा अनु। अनु सम्। सम् चरति। चरति यत्। यथ् सह। सह सर्वाभिः। सर्वाभिर् मिमीत। मिमीत सꣳश्लिष्टाः। सꣳश्लिष्टा अङ्गुलयः। सꣳश्लिष्टा इति सम्—श्लिष्टाः। अङ्गुलयो जायेरन्न्। जायेरन्नेकयैकया। एकयैकयोथ्सर्गम्। एकयैकयेत्येकया—एकया। उथ्सर्गम् मिमीते। उथ्सर्गमित्युत्—सर्गम्। मिमीते तस्मात्। तस्माद् विभक्ताः। विभक्ता जायन्ते। विभक्ता इति वि—भक्ताः। जायन्ते पञ्च। पञ्च कृत्वः। कृत्वो यजुषा। यजुषा मिमीते। मिमीते पञ्चाख्षरा। पञ्चाख्षरा पङ्क्तिः। पञ्चाख्षरेति पञ्च—अख्षरा। पङ्क्तिः पाङ्क्तः। पाङ्क्तो यज्ञः। यज्ञो यज्ञम्। यज्ञमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे पञ्च। पञ्च कृत्वः। कृत्वस्तूष्णीम्। तूष्णीम् दश। ॥ [६३] ॥ दश सम्। सम् पद्यन्ते। पद्यन्ते दशाख्षरा। दशाख्षरा विराट्। दशाख्षरेति दश—अख्षरा। विराडन्नम्। विराडिति वि—राट्। अन्नꣳविराट्। विराड् विराजा। विराडिति वि—राट्। विराजैव। विराजेति वि—राजा। एवान्नाद्यम्। अन्नाद्यमव। अन्नाद्यमित्यन्न—अद्यम्। अव रुन्धे। रुन्धे यत्। यद् यजुषा। यजुषा मिमीते। मिमीते भूतम्। भूतमेव। एवाव। अव रुन्धे। रुन्धे यत्। यत् तूष्णीम्। तूष्णीम् भविष्यत्। भविष्यद् यत्। यद् वै। वै तावान्। तावानेव। एव सोमः। सोमः स्यात्। स्याद् यावन्तम्। यावन्तम् मिमीते। मिमीते यजमानस्य। यजमानस्यैव। एव स्यात्। स्यान् न। नापि। अपि सदस्यानाम्। सदस्यानाम् प्रजाभ्यः। प्रजाभ्यस्त्वा। प्रजाभ्य इति प्र—जाभ्यः। त्वेति। इत्युप। उप सम्। समूहति। ऊहति सदस्यान्। सदस्यानेव। एवान्वाभजति। अन्वा-भजति वाससा। अन्वाभजतीत्यनु—आभजति। वाससोप। उप नह्यति। नह्यति सर्वदेवत्यम्।

सर्वदेवत्यँव्वै। सर्वदेवत्यमिति सर्व—देवत्यम्। वै वासः। ॥ [६४] ॥ वासः सर्वाभिः। सर्वाभिरेव। एवैनम्। एनम् देवताभिः। देवताभिः सम्। समर्द्धयति। अर्द्धयति पशवः। पशवो वै। वै सोमः। सोमः प्राणाय। प्राणाय त्वा। प्राणायेति प्र—अनाय। त्वेति। इत्युप। उप नह्यति। नह्यति प्राणम्। प्राणमेव। प्राणमिति प्र—अनम्। एव पशुषु। पशुषु दधाति। दधाति व्यानाय। व्यानाय त्वा। व्यानायेति वि—अनाय। त्वेति। इत्यनु। अनु श्रन्थति। श्रन्थति व्यानम्। व्यानमेव। व्यानमिति वि—अनम्। एव पशुषु। पशुषु दधाति। दधाति तस्मात्। तस्मात्थ् स्वपन्तम्। स्वपन्तम् प्राणाः। प्राणा न। प्राणा इति प्र—अनाः। न जहति। जहतीति जहति॥ ॥ [६५] ॥

(इतरम् पशुमान्थ् स्याद् यात्यनसो थ्सर्गम् तूष्णीꣳ सर्वदेवत्यम् वै त्रयस्त्रिꣳशच्च) ॥ ९ ॥

यत् कलया। कलया ते। ते शफेन। शफेन ते। ते क्रीणानि। क्रीणानीति। इति पणेत। पणेतागोअर्घम्। अगोअर्घꣳ सोमम्। अगोअर्घमित्यगो—अर्घम्। सोमम् कुर्यात्। कुर्यादगोअर्घम्। अगोअर्घँय्यजमानम्। अगोअर्घमित्यगो—अर्घम्। यजमानमगोअर्घम्। अगोअर्घमद्ध्वर्युम्। अगोअर्घमित्यगो—अर्घम्। अद्ध्वर्युम् गोः। गोस्तु। तु महिमानम्। महिमानम् न। नाव। अव तिरेत्। तिरेद् गवा। गवा ते। ते क्रीणानि। क्रीणानीति। इत्येव। एव ब्रूयात्। ब्रूयाद् गोअर्घम्। गोअर्घमेव। गोअर्घमिति गो—अर्घम्। एव सोमम्। सोमम् करोति। करोति गोअर्घम्। गोअर्घँय्यजमानम्। गोअर्घमिति गो—अर्घम्। यजमानम् गोअर्घम्। गोअर्घमद्ध्वर्युम्। गोअर्घमिति गो—अर्घम्। अद्ध्वर्युम् न। न गोः। गोर् महिमानम्। महिमानमव। अव तिरति। तिरत्यजया। अजया क्रीणाति। क्रीणाति सतपसम्। सतपसमेव। सतपसमिति स—तपसम्। एवैनम्। एनम् क्रीणाति। क्रीणाति हिरण्येन। हिरण्येन क्रीणाति। क्रीणाति सशुक्रम्। सशुक्रमेव। सशुक्रमिति स—शुक्रम्। एवैनम्। ॥ [६६] ॥ एनम् क्रीणाति। क्रीणाति धेन्वा। धेन्वा क्रीणाति। क्रीणाति साशिरम्। साशिरमेव। साशिरमिति स—आशिरम्। एवैनम्। एनम् क्रीणाति। क्रीणात्यृषभेण। ऋषभेण क्रीणाति। क्रीणाति सेन्द्रम्। सेन्द्रमेव। सेन्द्रमिति स—इन्द्रम्। एवैनम्। एनम् क्रीणाति। क्रीणात्यनडुहा। अनडुहा क्रीणाति। क्रीणाति वह्निः। वह्निर् वै। वा अनड्वान्। अनड्वान् वह्निना। वह्निनैव। एव वह्नि। वह्नि

यज्ञस्य। यज्ञस्य क्रीणाति। क्रीणाति मिथुनाभ्याम्। मिथुनाभ्याम् क्रीणाति। क्रीणाति मिथुनस्य। मिथुनस्यावरुद्ध्यै। अवरुद्ध्यै वाससा। अवरुद्ध्या इत्यव—रुद्ध्यै। वाससा क्रीणाति। क्रीणाति सर्वदेवत्यम्। सर्वदेवत्यंवै। सर्वदेवत्यमिति सर्व—देवत्यम्। वै वासः। वासः सर्वाभ्यः। सर्वाभ्य एव। एवैनम्। एनम् देवताभ्यः। देवताभ्यः क्रीणाति। क्रीणाति दश। दश सम्। सम् पद्यन्ते। पद्यन्ते दशाख्षरा। दशाख्षरा विराट्। दशाख्षरेति दश—अख्षरा। विराडन्नम्। विराडिति वि—राट्। अन्नंविराट्। विराड् विराजा। विराडिति वि—राट्। विराजैव। विराजेति वि—राजा। एवान्नाद्यम्। अन्नाद्यमव। अन्नाद्यमित्यन्न—अद्यम्। अव रुन्धे। रुन्धे तपसः। ॥ [६७] ॥ तपसस्तनूः। तनूरसि। असि प्रजापतेः। प्रजापतेर् वर्णः। प्रजापतेरिति प्रजा—पतेः। वर्ण इति। इत्याह। आह पशुभ्यः। पशुभ्य एव। पशुभ्य इति पशु—भ्यः। एव तत्। तदद्ध्वर्युः। अद्ध्वर्युर् नि। नि ह्नुते। ह्नुत आत्मनः। आत्मनोऽनाव्रस्काय। अनाव्रस्काय गच्छति। अनाव्रस्कायेत्यना—व्रस्काय। गच्छति श्रियम्। श्रियम् प्र। प्र पशून्। पशूनाप्नोति। आप्नोति यः। य एवम्। एवंवेद। वेद शुक्रम्। शुक्रम् ते। ते शुक्रेण। शुक्रेण क्रीणामि। क्रीणामीति। इत्याह। आह यथायजुः। यथायजुरेव। यथायजुरिति यथा—यजुः। एवैतत्। एतद् देवाः। देवा वै। वै येन। येन हिरण्येन। हिरण्येन सोमम्। सोमममक्रीणन्न्। अक्रीणन् तत्। तदभीषहा। अभीषहा पुनः। अभीषहेत्यभि—सहा। पुनरा। आऽददत। अददत कः। को हि। हि तेजसा। तेजसा विक्रेष्यते। विक्रेष्यत इति। विक्रेष्यत इति वि—क्रेष्यते। इति येन। येन हिरण्येन। हिरण्येन सोमम्। ॥ [६८] ॥ सोमम् क्रीणीयात्। क्रीणीयात् तत्। तदभीषहा। अभीषहा पुनः। अभीषहेत्यभि—सहा। पुनरा। आ ददीत। ददीत तेजः। तेज एव। एवात्मन्न्। आत्मन् धत्ते। धत्तेऽस्मे। अस्मे ज्योतिः। अस्मे इत्यस्मे। ज्योतिः सोमविक्रयिणि। सोमविक्रयिणि तमः। सोमविक्रयिणीति सोम—विक्रयिणि। तम इति। इत्याह। आह ज्योतिः। ज्योतिरिव। एव यजमाने। यजमाने दधाति। दधाति तमसा। तमसा सोमविक्रयिणम्। सोमविक्रयिणमर्पयति। सोमविक्रयिणमिति सोम—विक्रयिणम्। अर्पयति यत्। यदनुपग्रथ्य। अनुपग्रथ्य हन्यात्। अनुपग्रथ्येत्यनुप—ग्रथ्य। हन्याद् दन्दशूकाः। दन्दशूकास्ताम्। ताꣳ समाम्। समाꣳ सर्पाः। सर्पाः स्युः। स्युरिदम्। इदमहम्। अहꣳ सर्पाणाम्। सर्पाणाम् दन्द-

शूकानाम्। दन्दशूकानाम् ग्रीवाः। ग्रीवा उप। उप ग्रथ्नामि। ग्रथ्नामीति। इत्याह। आहादन्द-
शूकाः। अदन्दशूकास्ताम्। ताꣳ समाम्। समाꣳ सर्पाः। सर्पा भवन्ति। भवन्ति तमसा। तमसा
सोमविक्रयिणम्। सोमविक्रयिणव्ँविद्ध्यति। सोमविक्रयिणमिति सोम—विक्रयिणम्। विद्ध्यति
स्वान। स्वान भ्राज। ॥ [६९] ॥ भ्राजेति। इत्याह। आहैते। एते वै। वा अमुष्मिन्न्। अमुष्मि-
ल्ँलोके। लोके सोमम्। सोममरख्षन्न्। अरख्षन् तेभ्यः। तेभ्योऽधि। अधि सोमम्। सोममा।
आऽहरन्न्। अहरन्यत्। यदेतेभ्यः। एतेभ्यः सोमक्रयणान्। सोमक्रयणान् न। सोमक्रय-
णानिति सोम—क्रयणान्। नानुदिशेत्। अनुदिशेदक्रीतः। अनुदिशेदित्यनु—दिशेत्। अक्री-
तोऽस्य। अस्य सोमः। सोमः स्यात्। स्यान् न। नास्य। अस्यैते। एतेऽमुष्मिन्न्। अमुष्मि-
ल्ँलोके। लोके सोमम्। सोमꣳ रख्षेयुः। रख्षेयुर् यत्। यदेतेभ्यः। एतेभ्यः सोमक्रयणान्।
सोमक्रयणाननुदिशति। सोमक्रयणानिति सोम—क्रयणान्। अनुदिशति क्रीतः। अनुदिशती-
त्यनु—दिशति। क्रीतोऽस्य। अस्य सोमः। सोमो भवति। भवत्येते। एतेऽस्य। अस्यामुष्मिन्न्।
अमुष्मिल्ँलोके। लोके सोमम्। सोमꣳ रख्षन्ति। रख्षन्तीति रख्षन्ति॥ ॥ [७०] ॥

(सशुक्रमेव रुन्ध इति येन हिरण्येन स्वान चतुश्चत्वारिꣳशच्च) ॥ १० ॥

वारुणो वै। वै क्रीतः। क्रीतः सोमः। सोम उपनद्धः। उपनद्धो मित्रः। उपनद्ध इत्युप—
नद्धः। मित्रो नः। न आ। एहि। इहि सुमित्रधाः। सुमित्रधा इति। सुमित्रधा इति सुमित्र—
धाः। इत्याह। आह शान्त्यै। शान्त्या इन्द्रस्य। इन्द्रस्योरुम्। ऊरुमा। आ विश। विश
दख्षिणम्। दख्षिणमिति। इत्याह। आह देवाः। देवा वै। वै यम्। यꣳ सोमम्। सोमम-
क्रीणन्न्। अक्रीणन् तम्। तमिन्द्रस्य। इन्द्रस्योरौ। उरौ दख्षिणे। दख्षिण आ। आऽसादयन्न्।
असादयन्नेषः। एष खलु। खलु वै। वा एतर्हि। एतर्हीन्द्रः। इन्द्रो यः। यो यजते। यजते
तस्मात्। तस्मादेवम्। एवमाह। आहोत्। उदायुषा। आयुषा स्वायुषा। स्वायुषेति। स्वायु-
षेति सु—आयुषा। इत्याह। आह देवताः। देवता एव। एवान्वारभ्य। अन्वारभ्योत्। अन्वा-
रभ्येत्यनु—आरभ्य। उत् तिष्ठति। ॥ [७१] ॥ तिष्ठत्युरु। उर्वन्तरिख्षम्। अन्तरिख्षमनु।
अन्विहि। इहीति। इत्याह। आहान्तरिख्षदेवत्यः। अन्तरिख्षदेवत्यो हि। अन्तरिख्षदेवत्य

इत्यन्तरिख्ष—देवत्यः। ह्येतर्हि। एतर्हि सोमः। सोमोऽदित्याः। अदित्याः सदः। सदोऽसि। अस्यदित्याः। अदित्याः सदः। सद आ। आ सीद। सीदेति। इत्याह। आह यथायजुः। यथा-यजुरेव। यथायजुरिति यथा—यजुः। एवैतत्। एतद् वि। वि वै। वा एनम्। एनमेतत्। एत-दर्द्धयति। अर्द्धयति यत्। यद् वारुणम्। वारुणꣳ सन्तम्। सन्तम् मैत्रम्। मैत्रम् करोति। करोति वारुण्या। वारुण्यर्चा। ऋचा ऽऽ सादयति। आ सादयति। सादयति स्वया। स्वयैव। एवैनम्। एनम् देवतया। देवतया सम्। समर्द्धयति। अर्द्धयति वाससा। वाससा पर्यानह्यति। पर्यानह्यति सर्वदेवत्यम्। पर्यानह्यतीति परि—आनह्यति। सर्वदेवत्यंव्वै। सर्वदेवत्यमिति सर्व—देवत्यम्। वै वासः। वासः सर्वाभिः। सर्वाभिरेव। एवैनम्। ॥ [७२] ॥ एनम् देवताभिः। देवताभिः सम्। समर्द्धयति। अर्द्धयत्यथो। अथो रख्षसाम्। अथो इत्यथो। रख्षसामपहत्यै। अपहत्यै वनेषु। अपहत्या इत्यप—हत्यै। वनेषु वि। व्यन्तरिख्षम्। अन्तरिख्षम् ततान। तता-नेति। इत्याह। आह वनेषु। वनेषु हि। हि वि। व्यन्तरिख्षम्। अन्तरिख्षम् ततान। ततान वाजम्। वाजमर्वथ्सु। अर्वथ्स्विति। अर्वथ्स्वित्यर्वत्—सु। इत्याह। आह वाजम्। वाजꣳ हि। ह्यर्वथ्सु। अर्वथ्सु पयः। अर्वथ्स्वित्यर्वत्—सु। पयो अघ्नियासु। अघ्नियास्विति। इत्याह। आह पयः। पयो हि। ह्यघ्नियासु। अघ्नियासु हृथ्सु। हृथ्सु क्रतुम्। हृथ्स्विति हृत्—सु। क्रतुमिति। इत्याह। आह हृथ्सु। हृथ्सु हि। हृथ्स्विति हृत्—सु। हि क्रतुम्। क्रतुँव्वरुणः। वरुणो विख्षु। विख्ष्वग्निम्। अग्निमिति। इत्याह। आह वरुणः। वरुणो हि। हि विख्षु। विख्ष्वग्निम्। अग्निम् दिवि। दिवि सूर्यम्। सूर्यमिति। ॥ [७३] ॥ इत्याह। आह दिवि। दिवि हि। हि सूर्यम्। सूर्यꣳ सोमम्। सोममद्रौ। अद्राविति। इत्याह। आह ग्रावाणः। ग्रावाणो वै। वा अद्रयः। अद्रयस्तेषु। तेषु वै। वा एषः। एष सोमम्। सोमम् दधाति। दधाति यः। यो यजते। यजते तस्मात्। तस्मादेवम्। एवमाह। आहोत्। उदु। उ त्यम्। त्यम् जातवेदसम्। जातवेदसमिति। जातवेद-समिति जात—वेदसम्। इति सौर्या। सौर्यर्चा। ऋचा कृष्णाजिनम्। कृष्णाजिनम् प्रत्यानह्यति। कृष्णाजिनमिति कृष्ण—अजिनम्। प्रत्यानह्यति रख्षसाम्। प्रत्यानह्यतीति प्रति—आनह्यति। रख्षसामपहत्यै। अपहत्या उस्रौ। अपहत्या इत्यप—हत्यै। उस्रावा। एतम्। इतम् धूर्षाहौ। धूर्षाहाविति। धूर्षाहाविति धूः—साहौ। इत्याह। आह यथायजुः। यथायजुरेव। यथायजु-

रिति यथा—यजुः। एवैतत्। एतत् प्र। प्र च्यवस्व। च्यवस्व भुवः। भुवस्पते। पत इति। इत्याह। आह भूतानाम्। भूतानाꣳ हि। ह्येषः। ॥ [७४] ॥ एष पतिः। पतिर् विश्वानि। विश्वान्यभि। अभि धामानि। धामानीति। इत्याह। आह विश्वानि। विश्वानि हि। ह्येषः। एषोऽभि। अभि धामानि। धामानि प्रच्यवते। प्रच्यवते मा। प्रच्यवत इति प्र—च्यवते। मा त्वा। त्वा परि-परी। परिपरी विदत्। परिपरीति परि—परी। विददिति। इत्याह। आह यत्। यदेव। एवादः। अदः सोमम्। सोममाह्रियमाणम्। आह्रियमाणम् गन्धर्वः। आह्रियमाणमित्या—ह्रियमाणम्। गन्धर्वो विश्वावसुः। विश्वावसु पर्यमुष्णात्। विश्वावसुरिति विश्व—वसुः। पर्यमुष्णात् तस्मात्। पर्यमुष्णादिति परि—अमुष्णात्। तस्मादेवम्। एवमाह। आहापरिमोषाय। अपरिमोषाय यज-मानस्य। अपरिमोषायेत्यपरि—मोषाय। यजमानस्य स्वस्त्ययनी। स्वस्त्ययन्यसि। स्वस्त्य-यनीति स्वस्ति—अयनी। असीति। इत्याह। आह यजमानस्य। यजमानस्यैव। एवैषः। एष यज्ञस्य। यज्ञस्यान्वारम्भः। अन्वारम्भोऽनवच्छित्त्यै। अन्वारम्भ इत्यनु—आरम्भः। अन-वच्छित्त्यै वरुणः। अनवच्छित्त्या इत्यनव—छित्त्यै। वरुणो वै। वा एषः। एष यजमानम्। यजमानमभि। अभ्या। ऐति। एति यत्। यत् क्रीतः। ॥ [७५] ॥ क्रीतः सोमः। सोम उप-नद्धः। उपनद्धो नमः। उपनद्ध इत्युप—नद्धः। नमो मित्रस्य। मित्रस्य वरुणस्य। वरुणस्य चख्षसे। चख्षस इति। इत्याह। आह शान्त्यै। शान्त्या आ। आ सोमम्। सोमँव्वहन्ति। वहन्त्यग्निना। अग्निना प्रति। प्रति तिष्ठते। तिष्ठते तौ। तौ सम्भवन्तौ। सम्भवन्तौ यजमानम्। सम्भवन्ताविति सम्—भवन्तौ। यजमानमभि। अभि सम्। सम्भवतः। भवतः पुरा। पुरा खलु। खलु वाव। वावैषः। एष मेधाय। मेधायात्मानम्। आत्मानमारभ्य। आरभ्य चरति। आर-भ्येत्या—रभ्य। चरति यः। यो दीख्षितः। दीख्षितो यत्। यदग्नीषोमीयम्। अग्नीषोमीयम् पशुम्। अग्नीषोमीयमित्यग्नी—सोमीयम्। पशुमालभते। आलभत आत्मनिष्क्रयणः। आल-भत इत्या—लभते। आत्मनिष्क्रयण एव। आत्मनिष्क्रयण इत्यात्म—निष्क्रयणः। एवास्य। अस्य सः। स तस्मात्। तस्मात् तस्य। तस्य न। नाश्यम्। आश्यम् पुरुषनिष्क्रयणः। पुरुषनि-ष्क्रयण इव। पुरुषनिष्क्रयण इति पुरुष—निष्क्रयणः। इव हि। ह्यथो। अथो खलु। अथो इत्यथो। खल्वाहुः। आहुरग्नीषोमाभ्याम्। अग्नीषोमाभ्याम्वै। अग्नीषोमाभ्यामित्यग्नी—सोमाभ्याम्। वा

इन्द्रः। इन्द्रो वृत्रम्। वृत्रमहन्। अहन्निति। इति यत्। यदग्नीषोमीयम्। अग्नीषोमीयम् पशुम्। अग्नीषोमीयमित्यग्नी—सोमीयम्। पशुमालभते। आलभते वार्त्रघ्नः। आलभत इत्या—लभते। वार्त्रघ्न एव। वार्त्रघ्न इति वार्त्र—घ्नः। एवास्य। अस्य सः। स तस्मात्। तस्माद्। उवाश्यम्। आश्यँव्वारुण्या। वारुण्यर्चा। ऋचा परि। परि चरति। चरति स्वया। स्वयैव। एवैनम्। एनम् देवतया। देवतया परि। परि चरति। चरतीति चरति॥ ॥ [७६] ॥

(अन्वारभ्योथ् सर्वाभिरेव सूर्यम् भूतानाऽ ह्यं ति य दाहुः सप्तविंऽशतिश्च) ॥ ११ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

षष्ठकाण्डे प्रथमः प्रश्नः — क्रम पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
११	७६

ॐ